कवितावां

लेख

गजल

बातचीत

गीत

व्यंग

कहाणी

कुण्डलिया

रंग रेख

उलथो

सम्पादकी

□

आज जठै राजस्थानी भासा अर साहित सूं जुड्योड़ी केई समस्यावां आपो आप ई सुलझ रैयी हैं, वठै पत्रिकावां रै प्रकासन री गैरी चिन्ता सगळा रै सामै है। किणी भी भासा रो दारोमदार उण रै नुंवै लेखन माथै हुवै अर अैड़े लेखन नै सामै ल्यावण वास्तै भांत-भांत री पत्रिकावां रो होवणूं लाजमी है क्यूं के समकालीन लेखन में आज तरै-तरै रा सुर अर तरै-तरै री विचार धारावां सूं प्रेरित रचनावां दीसै इण वास्तै पत्रिकावां री सख्त जरूरत है पण अफसोस है के राजस्थानी भासा री फगत दो-अेक पत्रिकावां हैं अैड़ी हालत में सिरजण री संभावना अर उण री दिसा रो ठीक-ठीक अंदाज लगाणो मुस्किल है। साहित रै मांय अेक ठैराव जैड़ो लागै—नी कोई चर्चा अर नी कोई गोस्ठी अर नी कठै ई कैंड़ी प्रतिक्रिया।

मौजूदा लेखन सारू कोई खास वात कैवणूं नी चावूं। राजस्थानी नुवीं कविता नै छोड'र साहित री दूजी विधावां हाल कथ्य रै स्तर माथै भी आपनै नुवैं परिवेस सूं जोड़ नी पाई है। नुवीं कविता जरूर आज रै मिनख री सांस्कृतिक इकाई रै साथै जुड़'र उण रै आसै-पासै रै माहौल नै पिछाण्यो अर वैचारिक स्तर माथै आज रै मिनख री समस्यावां उठाई। सिल्प रा नुवां प्रयोग कविता री बुनियाद नै फैलाई अर जाण्या-अणजाण्या संदरभां सूं जोड़ी। राजस्थानी कहाणी अर नाटक हाल वठैई है जठा सूं आगै आवण री उमीद साहित रो हर पाठक चावै। उपन्यांस अर आलोचना लिखणै री जरूरत हाल मैंसूस कोनी हुई, ओ भी अेक ताजुब है। अठै आपां कैय सकां हां के सिरजण री रफतार साव मंदी है जद के आज रो माहौल सिरजण रै घणूं माकूल है।

आज जरूरी है के राजस्थानी साहित री आपरी पिछाण कायम व्है अर साहित रचनाकार रै आसै-पासै री जिन्दगी रो जीतो जागतो सबूत बणै। जुलम, सोसण अर अन्याय कठै नी सगळी जगां है पण फेरूं भी राजस्थान रै मिनख रो सुभाव, चरित्र अर उण री मानतावां आपरी ठौड़ न्यारी हैं। आज जिण हदबंदी अर नकली आधुनिकता रो सार है वठै मिनख री मांयली तस्वीर नै सामै राखणी चाहजे। रचनाकार री घणी-घणी जिम्मेवारी है जे उण रै कन्नै अेक गैरी अर बारीक दीठ हुवै तो। कोई भी रचनाकार आपरी रचना नै बेअसर मान'र नी चालै पण उण रै 'असर' रो माप-तोल भी करणूं जरूरी है।

'गोरबंद' रो पैलो अंक है। म्हैं चावूं के हरेक रचनाकार आपरी स्रेष्ठ रचना इण रै मांय भेजै जिण सूं साल भर री स्रेष्ठ रचनावां रो अेक जगां संग्रै व्है। ओ अंक तो फगत सरूआत है।

राजस्थानी भासा अर साहित सूं लगाव राखणियां लोगां सूं जको आर्थिक सहयोग विज्ञापना रै रूप में मिल्यो, उण सारू हार्दिक धन्यवाद।

सहयोगी सम्पादक रिछपालसिंघ जी सेखावत रो भी घणूं-घणूं आभारी हूं।

—गोरधनसिंघ सेखावत

स्री द्वारिकाप्रसाद सावू

संरक्षक

राजस्थान रै पिलाणी कस्बै में 2 जून 1928 नै सावू जी रो जलम। विरला कॉलेज पिलाणी सूं पढ़ाई अर सदा पैले दरजै सूं पास हुया। पढ़ाई रै पछै 1947 में मुजफ्फरपुर (विहार) में आपरै फर्म री थरपणा करी।

—सावूजी सूझबूझ अर व्यापारिक कुसळता रा धणी। आप उन्नीस वरस री उम्र में होजरी निर्माण रो काम सुरू करचो अर आपरी फर्म रो नांव 'मुजफ्फरपुर होजरी मिल्स' राख्यो। आ आज विहार री मोटी फर्म है जकी कागज, कपड़ो, केमिकल्स (कास्टिक सोडा) इत्याद रो देस-विदेस में सप्लाई रो काम करै। इण ढंग सूं सावूजी निर्माण अर वितरण रै काम सूं विहार प्रान्त रै औद्योगिक विकास में आपरी महताऊ भूमिका निभाई।

—मानीता उद्योगपति अर अनुभवी व्यापारी होणै सूं आप केई संस्थावां रा सदस्य अर अध्यक्ष वणाया गया।

—सन् 50 में नोर्थ विहार होजरी मैन्युफैक्चरिंग एसोसियसन रा अध्यक्ष।

—सन् 59 में विहार पेपर मर्चेन्ट्स एसोसियसन रा उपाध्यक्ष।

—सन् 65 सूं 70 ताईं विहार केवल कन्डेक्टर एण्ड मैन्युफैक्चरिंग एसोसियसन रा अध्यक्ष।

—सन् 77–78 में विहार चेम्वर ऑफ कॉमर्स रा उपाध्यक्ष। ईं साल सावूजी नै उपराष्ट्रपति वी० डी० जत्ती री तरफ सूं 'खुद री मैणत सूं वण्या उद्योगपति' रो पुरस्कार भी मिल्यो अर ओ पुरस्कार लेवणियां सावूजी विहार प्रान्त रा पैला व्यक्ति हा।

—सावूजी री योग्यता, प्रभाव अर बुद्धिमत्ता नै विहार राज्य सरकार भी स्वीकार करी अर आपनै केई संस्थानां में सदस्य राख्या जका आपरै सम्मान रो उदाहरण है।

—केवल एण्ड कन्डेक्टर पैनेल ऑफ नेसनल एलायन्स ऑफ यंग इन्टरप्राइजेज रा अध्यक्ष।

—विहार स्टेट इण्डस्ट्रियल डेवलपमेन्ट कॉन्सिल रा राज्य सरकार री तरफ सूं सदस्य।

—विहार मिनरल डेवलपमेन्ट कॉन्सिल रा राज्य सरकार री तरफ सूं सदस्य।

—सेन्ट्रल एक्साइज रिजनल एडवाइजरी कमेटी फोर स्माल इन्डस्ट्रीज रा सदस्य।

—भारत सरकार रै उद्योग मंत्रालय (विहार) री स्माल इन्डस्ट्रीज सर्विस री एडवाइजरी कमेटी रा सदस्य।

—अतै मोटै प्रतिष्ठान में काम करता थकां भी साहीत्यिक रुचि, साहित अर पत्रिकावां नै प्रोत्साहन अर आपरी जलमभोम पिलाणी सूं घणूं लगाव अर जुड़ाव। पिलाणी रै सामाजिक कामां में घणी रुचि। सड़क इत्याद वणाई।

—फिलाल आप मुजफ्फरपुर होजरी इन्डस्ट्रीज एण्ड एजेन्सी प्रा० लि० रा डाइरेक्टर। • • •

'गोरबंद' रा हेताळू

सरव स्त्री द्वारिकाप्रसाद सावू	पटना
,, नथमल तोदी	वम्वई
,, रामवावू गोयनका	कलकत्ता
,, स्यामलाल पारीक	वम्वई
,, सोहन सेठी	कलकत्ता
,, विस्वनाथ गुप्ता	कलकत्ता
,, रामनिवास सरमा	आसाम
,, रामनिवास जाजू	दिल्ली
,, चतुरभुज नेवटिया	कलकत्ता
,, रतन शाह	कलकत्ता
,, मोहनलाल सावू	जयपुर
,, रमेस तिवाड़ी	दिल्ली
,, रावेस्याम सावू	कलकत्ता
,, दुरगाप्रसाद सरावगी	कलकत्ता
,, सुरेन्द्र गुप्ता	दिल्ली
,, रामनिवास सावू	मंहूर
,, गुलावसिंह सेखावत	मुकुन्दगढ़
,, हनुमानप्रसाद सोनी	जयपुर
,, वासुदेव गोयनका	वम्वई
स्त्री अमरचंद सरमा	वम्वई
,, स्यामलाल सरमा	आसाम
,, वनवारीलाल वरमा	सतना
,, आतमाराम मोदी	वंगलोर
,, महावीरप्रसाद सरमा	कलकत्ता
,, उदयभानसिंह	जामनगर
,, चिरंजीलाल मुरारका	लक्ष्मणगढ़
,, गिरधारीसिंह सेखावत	पिलानी
,, सुरेस भारद्वाज	वम्वई
,, मंगेजसिंह सेखावत	दिल्ली
,, मनोहरसिंह राठौड़	पिलानी
,, सुरेस वूवना	कलकत्ता
,, वी० डी० जैन	सतना
,, गोपालक्रस्न लोयलका	वम्वई
,, लक्ष्मीकुमार खटोड़	कलकत्ता
,, वद्रीप्रसाद सरमा	भुवनेश्वर
,, थांवरमल वरमा	वम्वई
,, विहारीलाल सरमा	इन्दौर

• • •

लोकगीत—

गोरवंद

हांजी लड़ लूंवां रै लूंवां
हो भड़ भूंवां रे भूंवां, भूंवां हो
लड़ लूंवां रे लूंवां, लूंवां रे
भड़ भूंवां भूंवां भूंवां जी श्रो रे
म्हारौ गोरवंद लूंवाळो

हांजी श्रै गायां रे चरावती
म्हैं गोरवंद गूंथियौ
म्हैं तो भैंसड़ली चरावती
कोडा पोया श्रे पोया जी श्रो
म्हारो गोरवंद लूंवाळो

दचोराणी जिठाणी मिल
गोरवंद गूंथियों
म्हारी नैनकड़ी नणदल
कोडा पोया जी श्रो
म्हारो गोरवंद लूंवाळो

खारियै समंद सूं
कोडा मंगाया
जोधाणै जा पोया श्रो
पोया पोया श्रो
म्हारौ गोरवंद लूंवाळो
हांजी लड़ली लूंवा लूंवा श्रो
भड़ भूंवां हो, भूंवां, भूंवां हो
लड़ लूंवां रे लूंवां लूंवां रे
भड़ भूंवां भूंवां भूंवां जी श्रो
म्हारो गोरवंद लूंवाळो

• • •

गूंगौ परचौ

□

चन्द्रप्रकास देवल

वळद कह्यौ सागड़ी नै
क' इण बांजड़ बीड़ में
थोड़ौ हळ ढाब
इण जूड़ा नै अळगौ करदौ
म्हैं ई लाय लाय व्हियोड़ा
खांधा ठाड़ा करलां
आप ई इणां में पड़ी रावड़ी
अर बांवळिया रै गोड़ में बंध्या
मक्की रा टुक्कड़ रौ गरणौ खोलौ
धणी रै घर सूं दोपारौ कर' र आयोड़ौ
ओ कांसौ अरोग लौ
नींतर उण में
व्है जावेला किडियां
अर पछै आप आ रीस
म्हारी पूठ माथै
सड़ का रै मिस मांडोला.

नैठाव सूं बीड़ी सूंत लौ
म्है ई थोड़ा बागोल'र मूंत लां
पण धणी ताळ मती सुस्तावौ
छिंया जेड़ौ भाग कितीक ताळ
सूरज ई आपणै दांई तगड़ियोड़ौ
इणनै विसाई खावण रो कठै टैम
देखौ
दपोर नमवा आया
परा उठै
निसांस मत न्हाकौ
दिनां रौ हिसाब मत करौ
जूड़ौ तोकौ, जोत दौ
नाड़ाखिली काठी कर
परांणी हमावौ
आंपणी आ वळत
दिन बध्यां तांई री कोयनी
जीवणौ जित्ती ई सीवणौ है,

हांकता हंकता
आवौ घरविद री वात करां
जे थैं रीस नीं करौ
म्हैं अेक बात पूछां
क' म्हैं तो व्है जावां कायजें
नाक री पापड़ी फोड़
जद मिनख नाथ घालै
छता सींगा र करार रै
म्हांरौ कीं जोर नीं चालै.

पण थै तौ धणी सूं सवाया लांबा
डोढी करार चोड़ा खांधा
वूकां माथै चिलकै माछळियां
हाथा पगां वीस आंगळियां
पोतिया नीचै वैड़ौ ईज माथौ
पछै थांनै उण कीकर नाथ्यौ,

डावा हाथ सूं थांरै दावतां ई हळ
म्हांरा खांधा में बीजळी पड़जा
अर जमीं रा काळजा में हळवांणी
व्है जिणसूं सवाई वड़जा,

झळकण री पट्टी माथै ऊभा
हाथ रै लाव री आंटी देय
भरचौ चड़स ढ़ावलौ
हांकता जद जद मेल्हौ
हाथळ म्हांरै मोंरा
पूरी री पूरी हाथाळी मांड़दी
भरचोड़ी धराड़ गाड़ी नै
धरूंड़ी पकड़ तोक दौ
जद सावळ री भरौ सांग
लांठी सूं लांठी काकर तोड़ दौ,
पण
आ केड़ी अजब बात
क' धणी तो धणी
उण रै टींगर सांम्ही ई
थै खुणियां सुदी हाथ जोड़ दौ,

डावळी वोल्यौ –
छोटै मूंडै मोटी वात मत जाणज्यौ
म्हैं तगासियौ धणी नै
केई दांण सांच मानज्यौ,

म्हैं केई दांण
म्हारै खांधै तोक्यौ
इणरै टावरा री जानां, बिंदोळियां रौ बोझ
अर जीव में जीव घाल
हरख उमाव सूं
हूंस परबारौ दोडियौ

अर म्हानै ठीक-ठाक याद है
होळै-होळै पग मेलतौ, सोगाळौ ओढ़यां
लेयग्यौ आंरै मसांणा तांई
लकड़ियां सूं भरचोड़ौ छकड़ौ
ओ ई नीं
कदै-कदास छठै चोमासै ई सई
धणी रौ चटायोडौ लूंण
खेतां में, फेरां में, तांगां में, गाड़ां में
टोपां-टोपां परसेवा में काढ़
पाछौ सवायौ संभळायौ
गरज या क'
म्हैं तो ठोड़-ठोड़ निभायौ बळद पणौ.

असल में
नीं तो म्हैं जीवता जिनावर
अर नीं थैं मिनख जीव
म्हां मोलायोड़ी
अर थैं अडांणौ आयोड़ी चीज

चीजां रौ धरम अेक
वपराईजै वै धणी रै वास्ते ठोड़-ठोड़
अर चीजां नीं वोल सकै
वांरी न्यारी भासा
सियाळै-उन्हाळै, वेळां-कुबेळां
फगत धुड़-घुड़

अक कमतरी कविता मांडै
जिणनै थांरौ म्हारौ मालक
धोळै, दोफारां बेखटकै अरथावतौ
चिगळै अर गिट जावै,

भायला
रांम जांणौ कद अर कुण आंनै सिखायग्यौ
चीजां नै वापरण रौ
उंड़ौ'र झीणो भेद

अर उण हटोटी रै पांण
थांरी-म्हांरी तो जिनात ई कांई
अंजतांई वापरियां जावै औ मिनख
जळ नै, पवन नै, अगन नै, सूरज नै,
चाँद नै, ताँरा नै
धरती नै, अम्बर नै, घात नै, अघात नै
मिनख नै, जात नै, कुजात नै.

• • •

सगला अेक साथ

□

भूपसिंघ भूपेन्द्र

धूं धूं करतो लाल-पीळी
लपटां लेय'र बारै आवै
जीव मिचळावै
भीतरी लाय
अर मांयलो दरद
वखाण्यो नी जावै

जिदगानी री सुलफी मांय
समस्यां रा अव्वा विचाळै
पाक्यो कांकर फस्यो पड्यो है
इयां लागै
सुलफी मांय म्हारो जीव
तम्वाखूड़ी रो मासो है
चिलमड़ी माथै
ऊँट रा मींगणा री
धधकती वास्तै है
दीन-दुनियां रो सगळो वोझ
माथै मड्यो है
सवड़-सवड़
मजवूरयां रो कस खीचणों
उफणता सांसां नै रोक'र
आदी-पड़दी मैनत सूं
आ आंच री धधक
कसरा खिचाव सूं
दूणी भभकै है
पानड़ो सुलग्या सूं
थोडी'क वार
गळोथा, गळड़ा अर फैफडा मांय
विजळी रो करंट सो आवै
पण कांई ठा
आ लारलां दिनां री चमकैड़
आगला दिनां मांय काया नै ईं चकमो देसी
आ खून जळावाळी वास्तै
व्यवस्था री कांकर वीच फंस्या
पिटता-विकता-खपता मानस री काया रा
पान नै
जळा'र खाक कर देसी
अवार वस अवार
सुलफी नै उलटणी है

अवार
लाय हेठै दव ज्यासो नीचली चूंप
जकी नित आखरी आदमी रै
हाथां मांय रैयी
सगळा सूं ऊपर आज्यासी
अवार हर कोई चिलमपाड़ कोनी

चिलम उलट्या यार वरण ज्यासी
अवार सगळी ओड़्यां नै
काया फूंक आग दब ज्यासी
आदमी रा जीवड़ा रो पानो वच ज्यासी
वीचली कांकर नै
जबर जोर सूं अेका रो नेरणों देर
कूड़ा मांय फेंकसी

घरणा काला चिकत्ता पड़ग्या हैं
सुलफी री काया पर
थोड़ा दिन लागसी
साफ सुथरी होवा में
परण आ तै है
अेक सागै सगळा रो
सुलफी रो उलटाव
कारगर साबत होसी
सगळा अेक साथ।

• • •

परवसी री ओल

□

पुरसोतम छंगाणी

थे सैंग साचा हो
सौ टका साचा,
पण म्हैं
म्हारै मूंडै सूं किया केवूं
थे जांणो हो—
म्हारी निवळाई,
म्हारी सामरथ !
म्हारी हडी-विहूणी जीभ,
साकर अर लूण री भेद वता
म्हारै विवेक नैं भरमाती रेवै,
थे जांणो, चोखी तरां जांणो !

थे जांणो
म्हारी आंख्या
फगत म्हारी है,
रोसणी रा दिवला
कद सूं गिरवी पड्या है !
म्हैं जोवूं, घणौ जोवूं
पण दूजां री निजरां सूं
थे पण जांणौ हो
झूंपै अर मोल री डिजाइन।
म्हारा लाडला टावरिया
भूख–तिरस रा चित्रांम काढर
म्हारी करणी नैं वियालता रेवै
थे जांणौ, चोखीतरां जांणौ !

थे जांणौ हो
म्हैं ठाकर हूं
पण नांव री
म्हारी पाघ
कुण वुणी है,
कुण रंगी है,
थां नैं पूरी खबर है।
म्हैं जद–जद भी वांनैं पैरूं
थांनै पोंतर जाऊं
थांनै ई क्यूं
खुद नैं पण विसर जाऊं
कुरसी सारूं !
सगवड़ सारूं !!
म्हारो ओपतौ वर्तमान
सूगलै भूत री कथावां सुणार
म्हारे भविस नैं सिरजतौ रेवै
थे जांणौ, चोखी तरां जांणौ
म्हारी परवसी री ओल।
म्हारे असरिये री तोल॥

• • •

छेली चाल

▭

विष्णुदत्त जोसी

आवौ, खेला छेली चाल
या इण पार या उण पार,
गुचळका खावतां
घणां दिन तांई म्है
थांरी चालबाजियां सूं अजांण रैयौ,
आवती बगत आज घरां कैय'र आयौ
बाट मत जोइजौ सिझारा
जीतियां ई जावणौ है
नींतर पड़ियौ रैवूं अठै,
घांटी दूखण लागगी है
अबै घणौं जमी कांनी नीं देख सकूं.

लोग जांणै
थांरी तरकीबां कठा सूं आव
घर में कुटकाई करौ,
छोटपण में जिद पड़तौ
तौ करनै ई छोड़तौ,
ज्यू ज्यू आदमी उमर लेवै
समझदारी वधती जावै, जिद कम व्हैती जावै
पण आज लखावै, म्हैं छोटी व्है ग्यौ हूं
जिद पाछी पसरगी है,
खेलणो व्है तो भकै खेललौ
पण फेरूं कैवूं, हारणौ थांनै ई पड़सी

• • •

दोय कथा कवितावां

▭

रामधारी इमरोज

ओलखाण

वगत सूं पैला
बुढायोड़ी म्हारी देही
झुक्योड़ा कांधा
मिच्योड़ी आंख अर अणगिण झुर्री
थूं म्हानै नी पिछाणै ?
ओलखाण कर तो
–नीं याद आवै, आयसूं कठै
कदै मिल्यो
याद कर तो
म्हैं सूरज सागै जलम लेवूं
अर सिंझ्या रै अंधारै मर ज्यावूं
–नी याद आवै ?
–म्हैं वीं मुल्क रो चरित होवूं
आज जियां थू म्हनै नी पिछाणै
अेक दिन आवैलो
जद खुदरो जायोड़ो पूछैलो
ओ बाप कांई व्है ?

रूंख री छींया

चिलचिलाती घास में
हळ चलावतो किसान सुण्यो–
–पसीनै रा मोती म्हानै दे दे
वी सिर उठा'र पूछ्यो–
–थूं कुण
–परमात्मा ।
किसान हाँस्यो
–पसीनै रै इण मोतियां रो थूं
कांई करैला । म्हारै नी रूंख री छींया
जठै मझ दोफारां म्हैं आराम करूं
परमात्मा रो माथो झुकग्यो ।

• • •

राजस्थानी लेखन । अेक विचार

□

स्री गोपाल जैन

राजस्थानी लेखन री आपरी निजू परम्परा है जिण रो संदरभ राजस्थानी संस्क्रति, इतिहास, जीवन अर विचार री परम्परा-बोध सूं जुड्योड़ो है। जिया राजस्थान राजनीतिक चेतना अर आर्थिक जाग्रति रै परिपेख में की अलैदा अलगाव लियां दीसै वीयां ई राजस्थानी रो लेखन भी। ईं रो कारण ओ के लेखक, लेखकीय चेतना अर समय सापेक्षता रै बोध रै बीचै अेक अंतरंगता अर पारस्परिकता रैवै। राजस्थान रो मन जिण भांत अतीत सूं जुड्यो रैयो वी भांत ईं राजस्थानी रो लेखन अर चिंतन भी। सन् 70 रै अेड़ै-छेड़ै तेज-सिंघ जोधा 'राजस्थानी-अेक' रो सम्पादन कर्यो अर उण वगत राजस्थानी लेखन नै अेक नुवीं दीठ अर अेक नुवों मुड़ाव मिल्यो अर रचना रै कथ्य, सिल्प, विचार अर उण रै स्वरूप रो अेक नुवों परिवर्तन सामै आयो। पण आ नुवैपणै री प्रक्रिया लगोलग नी चालती रैयी। ई कारण ओ है के जद ताईं रचनाकार रै कनै चिन्तन, विचार अर दर्सन री प्रष्ठभूमी नी हुवै तद ताईं वो आपरै समय सापेक्ष यथार्थ नै नी देख सकै अर नी रचना में ढ़ाळ सकै। राजस्थानी लेखन रै मांय ईं कारण ईं भाव-बोध, जमीन बोध अर विचार बोध रो संकट रैयो।

जे आज राजस्थानी लेखन में ठहराव दीसै तो उण रो अरथ स्यात रचनाकार अर रचना रै बीचैं समय सापेक्ष स्थिति रो अभाव है। क्यू के नुवो रचनाकार नुवीं स्थिति सूं जुड़ाव नी मैसूस कर सक्यो इण कारण उण री रचनावां में जीवन, गांव अर सैर री प्रकिया, सांस्क्रतिक परिवेस रो बदळाव, अर्थिक मोर्चे माथै जूझतो राजस्थानी आदमी आपरी अभिव्यक्ति पावण सारु समर्थ नी हुयो। राजस्थानी लेखन इण दिसा मांय आपरी सिरजण चेतना नै थिर नी कर पायो। की अप-वादां नै छोड़'र जे ओ कह्यो जावै के गत्यात्मक द्रस्टि सूं राजस्थानी री कविता अर कहाणी रो लेखन ठहराव माथै ई रैयो। इण रै मांय समै री पकड़ नी अर यथार्थ रै सम्पूर्ण परिपेख मांय सम्पूर्ण विवेचना, गहराई अर अभिव्यक्ति नी। कारण के राजस्थानी लेखन रै मांय नुंवा विचारा, समझ री पकड़, दूजी भासावां रै साहित रो अध्ययन, गहन आंतरिक विवेचना, विस्लेसण इत्याद रो अभाव रैयो। समाज रै सम्पूर्ण परि-

पेख में सम्पूर्ण गत्यात्मक वीचै भांक'र इण नै अस्ति ने, आदमी नै, नियति नै आलेखण देवणों, वोध अर सिल्प रै धरातल माथै नुवां प्रयोगां रो सिरजण करणों अर मानव नियति नै रचना, जीवन अर समाज री कामना करणों इण समस्या रो समाधान हो सकै हो।

आज राजस्थानी साहित री जकी नुवीं विधावां दीसै उण में कविता रै साथै ई राज-स्थानी कहाणी रो मुड़ाव अर चित्रण यथार्थ री तरफ है। राजस्थानी कहाणी जको जीवन भांकै वो राजस्थान रा परम्परा-वोध सूं जुडयोड़ो है। राजस्थान रै परम्परागत रूप अर संस्कृति रै साथै ई नुंवी रचना रो नुंवो राजस्थान अर उण री समस्यावां भी उभर रैयी हैं पण राजस्थानी री कहाणी विधा मांय इण परिवर्तन रो आभास नी, भविस्य री दिसा रा संकेत नी, विचारा वीचै जीवन अर समाज नै समभणै री वजाय सिल्पगत भावगत, विचारगत द्रस्टि री अपेक्षा जिण रूप भांत-भांत रा दर्सन, मनोविज्ञान, राजनीति, समाज नीति अर मूल्य वोध रै धरातल माथै जीवन अस्ति अर समाज नै उघाड़ अर आलेखन री उडीक रो वोध राजस्थान री कहाणी रो वोध नी।

राजस्थानी कहाणी राजस्थानी रा अधिकांस परम्परागत जीवन, आकांक्षा अर संवेगां सूं जुडयोड़ी होवणै रै खातर उण रै कथ्य में ताजगी नी, विस्लेसण मांय गहराई नी, भविस री दिसा सारू द्रस्टि नी, सिल्पगत, भावगत, विचारगत अर वोवगत नुंवा प्रयोगां री सिरजण नी। जद ताई जीवन रो सगळो स्पंदन अर परिपेख कहाणी रो परिपेख नी वणै, वदलाव लेती स्थितियां अर दिसा नै तलासती अस्ति-जात्रा रो उण वीचै स्पंदन नी- तद ताईं अपूर्ण कहीजसी। आज री राज-स्थानी कहाणी हिन्दी, वंगला, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, अमेरीकी इत्याद भासावां री कहाणी रै वरावर वणै, ओ घणू जरूरी है। ईं वास्तै चाहजे के वा नुंवै जीवन अर सुंवै वोध नै उजागर करै।

अठै एक वात भासा सारु भी कही जा सकै है के राजस्थानी री भासा रो संकट इण रो आन्त-रिक संकट है। राजस्थानी भासा राजस्थान रा भिन्न-भिन्न अंचला री आपरी विसेसता अर आपरी समभ, भासा गठन अर सवद चयन वीचै आपरो निजू रुभान। भासा रै सवदां मांय अेक अर्थ स्थिति वोध भी हुवै। राजस्थानी रो मुड़ाव उण राज-स्थानी भासा री गठन री तरफ है जको राजस्थानी रो परम्परागत वोध रो परिवेस है। सवद रै चयन अर भासा रै गठन नै जिण भांत व्रज अवधी रै पछै हिन्दी रै मांय खड़ी वोली री सिरजणां री वांछा, जिण सूं राजस्थानी नुंवी संवेदना, विचार अर वोध नै प्रगट करणै सारू समर्थ हुवै अर जनमानस री समभ रै घणी अनुकूल हुवै। राजस्थानी भासा रो सन्दरभ संस्कृत भी है इण वास्तै राजस्थानी रै सवद चयन में संस्कृत सूं भी सवद लिया जांय तो ज्ञान-विज्ञान अर चिन्तन री द्रस्टि सूं राजस्थानी री समर्थता संभव अर गरिमा वोध री व्याप्ति, जकी सवदां रै चयन मांय निहित हुवै, उण आकांक्षा नै पूरीजता संसार री भावना री सिद्धि वास्तै जे ज्ञान-विज्ञान रै पक्षां सूं जुडयोड़ा दूजा सवद जोड़ लिया जावै तो इण में कोई वुराई नी।

राजस्थानी रो लेखन आज आन्तरिक अर वाह्य दोनूं तरफा सूं संकटग्रस्त है। आन्तरिक रूप मांय राजस्थानी लेखन रो स्वयं रो पराजय भाव, गरिमा बोध री रिक्तता रो भाव मूल कारण है। राजस्थानी रो लेखन सन्त अर विचार दर्सन परम्परा नै छोड़'र राज्याश्रय में रैवतो आयो। आज राजस्थानी रो अेक बडो वर्ग राजस्थानी रै साथ मंचा अर मनोरंजन सूं जुड़'र व्यवसाय रो माध्यम है। जका जीवन्त द्रस्टि रा साहितकार हैं उण रो मूल्यांकन अर स्थिरीकरण नी। राजस्थानी लेखन रा मापदंड परम्परा, लोक संस्क्रति अर वीर संस्क्रति ताईं सीमित। राजस्थानी लेखक रो समकालीन बोध, युग सत्य, विस्व अर ब्रह्माण्डीय चेतना रो अभाव अेक और कारण है। लेखन री द्रस्टि दिसावां सूं जुड़चोड़ी नी अर विचार, दर्सन अर दिसा सूं रीतो लेखन सम्पूर्ण अभिव्यक्ति अर मानव जीवन नै पूरणै अर वदळावणै में समर्थ नी। साहित तो अेक जूझती प्रक्रिया है जिण वीचै समाज, जीवन, अस्ति, युग अर बोध नै आलेखण देवणै री, परिवर्तन करणै री गहरी भावना है फेरूं राजस्थानी रो आपरो संकट है राजस्थानी नै वोली मानणो, राजस्थानी भासा री अलग लिपी नी होवणों, राजस्थानी री संविधानगत मानता रो अभाव, प्रकासन री सुविधा रो अभाव, प्रचार-प्रसार री योजना नी होवणी, पत्र-पत्रिकावां रो अभाव इत्याद। इण ढ़ंग सूं देखा के राजस्थानी लेखन रै सामै केई समस्यावां हैं अर सगळा सूं मोटी है आज रै समकालीन साहित रै वरोवर आवणों। आज जको लिख्यो जावै है, वो कत्तो साहित रो अंस है अर कत्तो फगत राजस्थानी साहित नै वढ़ावो देवणै री सहानुभूति सूं लिख्योड़ो- इण वात री जांच-पड़ताल करां तो घणी उमीद नी करी जा सकै। पण दूजी तरफ म्हारै आं विचारां सूं निरासा भी नी होवणी चाहजे, ओई कारण है के आज लिख्यो जा रैयो है अर लिखतो रैवणूं चाइजे, पण के लिख्यो अर कांई लिख्यो, आ वात तो महताऊ है।

• • •

दोय गजल

□

कुंदनसिंघ सजल

एक

वगत रो भी अजीव फेरो है,
आज सूरज रै घरां अंधेरो है।

दीसै जका अंधेरै रा बौपारी,
चांद रो उण रै घरां डेरो है।

सिझ्यां रा जका दलाल हैं यारो,
कैद उण रै घरां सवेरो है।

मिनख री हरेक चालां माथै,
जातो, भासा अर धरम रो घेरो है।

वै उजाळै री वात कर रैया है,
जका अंधकार नै विखेरचो है।

सैर आकास वणग्यो व्हैला,
पण सजल रो गाँव में वसेरो है।

दोय

जीवण जिया भार व्है गयो है;
ठहरचोड़ी जलधार व्है गयो है।

प्यार ईं धन-प्रधान जुग में,
घाटा रो बौपार व्है गयो है।

वगत जिण सूं पटी नहीं,
वो रद्दी अखबार व्है गयो है।

दिनगै मिलणै री आस जगी,
सांझ री वेळा इनकार व्है गयो है।

नी मन में तो नी वारै रह्यो,
घुटन भरचो सो प्यार व्है गयो है।

जिण माथै नी तोरण नी सहनाई,
इसड़ो सूनो दुवार व्है गयो है।

• • •

जोबण है

▭

कल्याणसिंघ राजावत

गोरी ! थांरै नैणां में मदसाल्- जोबण है ।

गोरी ! थांरी वाणी बैण रसाल्- जोबण है ।

जै जीवण जोबण नीं होतौ- तो सपनौं सांचो नी होतो ।

सांस अलूणी ही रह जाती- प्रीत रो दिवलो ही कुण जोतो ।

गोरी ! थांरा उलझै सुलझ्या बाल्- जोबण है ।

गोरी ! थांरी गज मस्ती री चाल्- जोबण है ।

जै भंवरौ बागां नी जातौ, तो फुलड़ौ यूँ ही मुरझातौ ।

सौरम री मरजादा घटती- रूप कंवारो ही रह जातो ।।

गोरी ! थांमे फूलां री फुलवार- जोबण है

गोरी ! थांरी काया ही कचनार- जोबण है

जै रंग रौ बोपार नी होतौ, तो रुत रौ रुजगार नीं होतो ।

रंग रंगिया भव सागर तरता- वदरंग बेड़ौ पार नीं होतो ।।

गोरी ! थांरा अंग अंग रंग साल्- जोबण है

गोरी ! थांरा अधरां मिसरी थाल्- जोबण है

जै जग में सिणगार नीं होतौ। तो जीवण में सार नीं होतौ ।

काजल् टीकी रै बिन फीकौ- अंग रहतौ- अणगार नीं होतौ ।।

गोरी ! थां में पायल री झणकार- जोबण है

गोरी ! थां में मिलणै री मनवार- जोबण है

गीत

▭

रिछपालसिंघ सेखावत

म्हारा मन रा वासी सूवटा
म्हारा हरियल हरियल सूवटा
थारी याद घणेरी आवैली
म्हारा परदेसां रा सूवटा

थे दूर देस नै जावोला, म्हारी नींदड़ली उड़ जावैली
अै लाम्बी लाम्बी रातड़ल्यां म्हारी वैरण बण जावैली

थारो पंथ निहारूं सूवटा
थारी गैल वुहारूं सूवटा
थारी ओळूड़ी तड़फावैली
थे वेग पधारो सूवटा। म्हारा मन रा...

जद वादळियो गरजैलो, मोरां मीठी तान सुणावैला
म्हारी छाती धड़का खावैली, नैणां में आंसू आवैला

थारै मन रम ज्याऊं सूवटा
सैपना में वस ज्याऊं सूवटा
थारी सूनी सेज सजावूंली
थे धीर वंधावो सूवटा। म्हारा मन रा···

थारी वागां वाट निहारूंली, थारै आंगण जोत जगावूंली
हरखीजैलो मनड़ो म्हारो, चढ़ मैड़ी थाळ वजावूंली

थारी वात चितारूं सूवटा
थारी मौज मनाऊं सूवटा
ओ जीव घणेरो तड़फैलो
थे परदेसण रा सूवटा। म्हारा मन रा···

गीत

प्रेमजी प्रेम

म्हारा गीत गाँव की धूल़
धूल़ कै पगां बंधी रमझोल़ ।

फिरतां फिरतां जा पूगै मन
सुख महलां की पाल़ ।
रुत की राणी ऊभी दीसै
भर मोत्या को थाल़ ।
म्हारा गीत कंवल का फूल
फूल पै नीलम को सो झोल़
धूल़ कै पगाँ बंधी रमझोल़ ।

पाँख लगायां आस अचपल़ी
नापै गगन बिसाल ।
पण नी धापै लोभी मन का
अै सपना कंगाल ।
म्हारा गीत पवन में झूल
झूलता जा मरवण की पोल़
धूल़ कै पगां बंधी रमझोल़ ।

वात चीत–

'गहरै अरथां में अपील करै जैड़ो कोई कवी लागियो नी, लागियो व्हैतो तो म्हनै कविता लिखण री जरूरत ई क्यूं पड़ती ?'

नुवी कविता रा सिरैनाव कवी तेजसिंघ जोधा सूं बतलावण

▭

गोरधनसिंघ सेखावत

★ तेज सा आज आपनै कीं अैड़ी वातां पूछवो चावूं जिणां रो आपरै लेखन सूं घणूं तालुक है। वीयां आपां वतळाता रैया हां पण आज अेक नेहचै सूं की गुरबुर करां। पैली वात तो आ के आप लिखणूं कद सुरू करयो ? पैलां आपरो भुकाव हिन्दी री तरफ हो या राजस्थानी री तरफ अर जे आपनै ध्यान व्है तो उण वगत आपरै सामै कांई परिस्थिति ही ?

—गोर सा, म्हैं सन् 65 रै आसै-पासै लिखणो सरू करियो, पैला हिन्दी में, पछै राजस्थानी में। खुद रा पिताजी नै लिखतां देख्या करतो, वां री देखा-देखी सूं लिखवा रो विचार आयो होवैला। वां दिनां हिन्दी में बच्चन श्री री कई कविता-पोथ्यां पढ़ी, ज्यूं 'निशा-निमन्त्रण', 'सतरंगिनी' अर 'मधुशाला' वगैरा। वां ई सूं प्रभावित होय'र हिन्दी में छंदोवद्ध कविता लिखणी सरू कीवी। 'चिन्गारी' नांव सूं अेक कविता-पोथी री पांडुलिपी भी तैयार करली।
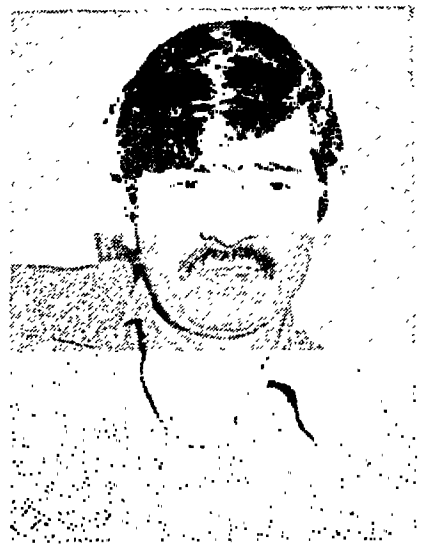
वां दिनां उण नै छपावण रो मन हो। दूजी परिस्थितियां आपनै कांई बताऊ, अेक साव छोटै सै कस्बै में रह्या करता, जठै साहित्य रो दूजो माहौल तो हो ई कठै ?

★ हिन्दी री नांई आपरी राजस्थानी री पैली पोथी 'ओळूं री ओळयां' भी छंदोवद्ध है। हिन्दी सूं लिखणूं सरू कर'र जद आप राजस्थानी

कानी आया तो ई क्रति रै लारै आपरी कांई मानसिक स्थिती रैयी, जद आप ई नै लिखी ?

—'ओळू री ओळचां' म्हैं सन् '70 में लिखी। जयसंकर प्रसाद री पढ़ाई अेक विसिस्ट कवी रै रूप में एम. ए. में करै ही, वां री रचनावां सूं प्रभावित भी हो। म्हैं वां ई दिनां 'कामायनी' रै अेक सर्ग रो राजस्थानी में अनुवाद भी करियो। वां री कविता पोथी 'आंसू' रौ छंद म्हैं 'ओळू री ओळचां' रै वास्तै चुणियो। बाकी मानसिक हालत उण काव्य रै लारै जो भी रैयी, वा खुद उण में ई साफ है। खासी काची-पाकी अर आधी-अधूरी सी कविता ही वा। पण म्हारै विचार सूं उणमें घणौ की अैड़ो हो, जको राजस्थानी कविता रै वास्तै नुवो हो— खासकर उण री काव्य-भासा बिल्कुल ई नुवी भांत री ही– प्रतीक-बिम्ब वगैरा भी। अर कठै-कठै अै सब सायास भी हा।

★ राजस्थानी लिखणै री प्रेरणां आपनै किण सूं मिली या सरू सूं की राजस्थानी रै प्रति आपरो लगाव या भुकाव हो ?

—म्हैं सोचूं खुद रा कुवद-कलाप ई राजस्थानी री तरफ लाया होसी। बाकी यूं जाणकारी में तो ही ई के राजस्थानी बाकायदा अेक भासा है अर उण में केई कवी लिखै अर लिखता आया हैं। चन्द्रसिंघजी री 'बादली' अर नारायणसिंघ जी भाटी री कीं किताबां म्हारै घरै ही, अर वां री मारफत ई पैलपोत राजस्थानी सूं सैंध-पिछाण वणी। यूं कन्हैयालालजी सेठिया री कवितावां जद स्कूलां रै पाठ्यक्रम में पढिया करता, तौ बेहद ई पसंद आया करती।

★ सरू में अैड़ा कुणसा राजस्थानी लेखक हा जिण री रचनावां आपनै घणी अपील करी-खासकर कवियां में ?

—पैलपोत पढ़ण में आया अर पसंद आया जका तीनेक कवियां रो जिकर तो म्हैं अवार आपरै सामै करचो- पण आप 'घणी अपील' आळी वात कैवो, वा म्हारै खयाल सूं कीं दूजा भी केई सवाल सामै राखै'के म्हैं सरू में उणां नै पढचा तो जरूर पण अपील आळी वात अलग है। ई वास्तै गहरै अरथां में 'अपील' करै जेड़ो कवी कोई लागियो नी, जे लागियौ व्हैतो, तो म्हनै कविता लिखणै री जरूरत ई क्यूं पड़ती ?

★ आपरै नांव री चर्चा 'राजस्थानी अेक' रै सम्पादन सूं सामै आई। 'राजस्थानी अेक' आज आपरो नुवों इतिहास वणायो अर अेक पूरै दमखम रै साथ नुवीं कविता नै वगत रै वदळतै फेर साथै सामी राखी। ई री सम्पादकी में आप आ मानी है'क 'राजस्थानी कविता रो लारला चाळीस वरसां रो इतिहास हांफळा रो इतिहास है।' दूजी कानी ई हांफळा रै इतिहास में आपरो सम्पादन 'हेमाणी' भी है। इण वास्तै म्हैं पूछणू चावू'क कांई राजस्थानी कविता री हांफळा सूं परै भी कोई अैड़ी पिछाण ही अर जे पिछाण ही तो हांफळा रो 'खास अरथ' कीं सन्दर्भ में आप मानो ?

—'हांफळां' सूं म्हारो अरथ खुद राजस्थानी अेक री सम्पादकी में ई स्पष्ट हो। इण सूं म्हारो मतलब ओ है'क 'राजस्थानी कविता रौ लारला चाळीस वरसां रो इतिहास हांफळां रौ इतिहास

है, नी उण में गत-गुग्रें सूं ग्रायोड़ा मोड़ है ग्रर नी मारग रो थिथ-त्रंथ्यो लखाण।' कीं ग्रैड़ो ई लिखियो हो म्है। ज्यूं-त्यूं राजस्थानी कविता रै जोड़ा-जोड़ लखण सारू ठौड़-ठौड़ 'छलांगां' भरियोड़ी लखावै ही। ग्रै 'छलांगां' ई म्हारी निजर में 'हांफळा' हो। ग्रां हांफळा में जकी कीं भी 'उपलब्धि' जैड़ो है वो 'उपलब्धि' तो उण दिन होय पासी जद ग्रागै री कविता रा कवी उण रो रस-कस ग्रापरी कविता में काढ़ पासी। वो वां री कविता री 'टेक' ग्रर 'स्हारो' वणसी। 'हेमाणी' तो ग्रैड़ा 'हांफळा' रै मांय सूं चुणियोड़ी कवितावां रो कविता रै सुभाव ग्रर सिल्प रै ग्रंदाज मुजब संग्रै है।

★ ईं लारला चालीस वरसां ग्राळी कविता रै बावत 'हेमाणी' रै सम्पादन में ग्राप ग्रेक जगां टिप्पणी करी के'जे उण नै ग्रोलखां तो 'दीठाव' रो व्हैणो ग्रेक वात है, उणरो 'दीठ' में व्है सकणों दूजी।' कांई ग्राप कीं कवियां री मिसाल देवता ग्रा वात वता सको हो कांई ?

—इण ढंग री वात कैवण सूं म्हारो मतलब स्पस्ट हो के पैली रा कवी पूरै काव्य-परिहस्य रै प्रति जिम्मैदार ग्रर सावचेत नी हा। वां री सावचेती ग्राप-सीमित ग्रर ग्राधी ग्रधूरी ही। इणी वास्तै कविता माथै पुख्ता विचार री कोई परम्परा कायम कोनी होई। वै कीं ग्रापरै हिसाव सूं, कीं हिन्दी रै प्रभाव सूं ग्रर कीं कवी री मौज-मस्ती सूं लिख्यो। इण वास्तै वो ग्राज कविता जैड़ो जरूर लागै क्यू के ग्रापां उण नै वीं टेम रा परिहस्य सूं जोड़'र नी देखां पण जे वो ग्रापरै वगत सूं जुड़'र ग्रोळखीजै तो केई मोटा खोट भी दीसै। ग्रो तो ग्रेक निरपेख दीठ रो मूल्यांकन है ईं सूं वेसी जे ग्राप पूछणों चावो तो वा कवियां नै चोखी नी लागैली ईं वास्तै छोड़ो।

★ राजस्थानी नुंवी कविता रो दौर ग्राप कठै सूं सरू करो। 'राजस्थानी-ग्रेक' रो सम्पादन करतां ग्रापरै दिमाग में ग्रैड़ी कुण-कुण सी वातां ही जकी कथ्य ग्रर सिल्प री द्रस्टि सूं साव नुवीं लागी ?

—इण वात नै तो ग्राप भी मानोला के कविता री मुक्त छंद में ग्रावणो ई नुवीं कविता कोनी। नुवीं कविता रो दौर कठै सूं सरू होयो ग्रर कठै सूं नी, इण नै तो कवियां रो इतिहास लिखण-ग्राळां रै वास्तै रैवण दिरावो। हां 'राजस्थानी-ग्रेक' कविता में ग्रापनै काव्य-विसयां री साम-यिकता ग्रर विविधता निगै ग्रासी। यथार्थ रो भी नुवौ ई रूप - ग्रभिव्यक्ति रै ढंग में ग्रर काव्य विसयां रै चुणाव में भी राजस्थानी ग्रेक

री कविता साव नुवीं अर अबोट ही। यूं अगर आं री डिटेल में जावां तो अेक पूरो लेख तो आं सब माथै ई त्यार होय सकै।

★ राजस्थानी री नुवीं कविता दूजी भासावां री तुलना में कठै कांई है? आज री कविता बाबत आप कांई सोचो?

—दूजी भासावां री तुलनां में तो कांई कैवां, पण यूं हालत ठीक ई है। खासी भली तादाद में लोग कविता में आया है। नुवीं कविता रा कवियां नै केन्द्रीय साहित्य अकादमी रा पुरस्कार भी मिलिया हैं पण कविता री जांच रो जतन हाल भी कोनी। राजस्थानी भासा री अबार जकी हालत है उण में साहित्यिक अर साहित्येत्तर सवाल गडमड होयोड़ो चालै। साहित्येत्तर आग्रहां नै दबाव री वजह सूं हर लेखक अर कवी नै वढ़िया ई बतावणो पड़ै। भासा रै वास्तै समर्थन जुटावण रो अर भासा रै विकास रो सवाल है।

★ राजस्थानी नुवीं कविता रै माथै ओ आरोप लगायो गयो के नुवीं कविता देखा-देखी में लिखी जा रैयी है पण बा रचनाकार री मांयली जरूरत हाल नी बणी। ईं रै बारै में आपरो कांई विचार है?

—कोरी देखा-देखी सूं ई नुवीं कविता लिखीजती होवै, म्हारै विचार सूं अैड़ी बात नी। है जकां रै वास्तै तो बा मांयली जरूरत ई है, नहीं तो बारली जरूरत तो है ई कांई? क्यूंके कवी अगर बारली जरूरत सूं ई लिखता तो आप देखोला के हाल भी परम्परागत काव्य रूप ई ज्यादा पोपुलर है– लोगां रै बीच में अर वां नै अपणाय'र वै बारली जरूरत ज्यादा आछी तरह सूं पूरी कर सकता।

★ राजस्थानी नुवीं कविता आधुनिकता रै अरथ में कठै तांई आज रै राजस्थानी जीवण सूं जुड़ियोड़ी है। कांई आपनै मैंसूस नी हुवै के सन् 70 रै बाद री विकास-यात्रा में फेरूं अेक ठैराव आयग्यो है?

—राजस्थानी जीवण सूं नुवीं कविता रो जुड़ाव आधुनिकता रै अरथ में ई है। साधारण तौर माथै राजस्थान रो जीवण परम्परागत, सामन्तवादी अर जड़ है– मध्ययुगीन मानमोळा सूं बंधियोड़ो। आधुनिकता ईं जीवण रै वास्तै हाल भी ऊपरली अर दिखावटी चीज ई है। आप ठैराव रो कह्यो, पण म्हारै विचार सूं ठैराव जैड़ी बात कोनी, आं बरसां में केई चोखा कवी मुंडागै आया है–ज्यूं चन्द्रप्रकाश देवळ। 'राजस्थानी-अेक' रै बाद रा कवियां में जे म्हनै सबसूं ज्यादा भरोसैदार लागै तो वो चन्द्रप्रकाश देवळ है।

★ आं दिनां आप कवितावां लिखणों छोड़ मो राख्यो है। कांई आप लिखण री जरूरत ई मैंसूस नी करो या कोई दूजै माध्यम री तलाश में हो?

—म्हारै लिखवा में सदा ई लंबा-लंबा अंतराल आवता रैया, इण वास्तै आ तो किया कैय सकूं के लिखणो छोड़ दियो। हां, अेक गेप जरूर

ग्रायोड़ो है। लिखवो टाळ दूजो कोई माध्यम म्हारो होय सकै, ग्रबार तो ग्रैड़ो कोनी लागै।

★ रचना-प्रक्रिया रै बारै में ग्रापरो कांई कैवणो है। 'दीठाव रै वेजा वारै मांय' कविता रै लारै कांई द्रष्टि रैयी ?

—रचना-प्रक्रिया नै मौजूदा वगत में साहित्य री सब ई विधावां में जबरदस्त महत्व मिळियो है। ग्रो खुद रचना रै वावत वदळियोड़ो द्रष्टिकोण रो प्रमाण है पण ग्रसल चीज तो फेरूं भी रचना ई है। 'दीठाव रै वेजा वारै मांय' कविता जो भी है ग्रापरै सामी है उण माथै कवी री टिप्पणी रो कांई ग्ररथ ?

★ म्हनै लागै रचनात्मक लेखन री बजाय ग्रापरी सम्पादन रै काम मे घणी रूचि है।

—ग्रगर ग्रापनै ग्रैड़ो लागै तो होय सकै है इण में सांच होवै। म्हारै नजदीक तो म्हारी सगळी चेष्टावां रो ग्ररथ भासा सीखवा रो जतन है।

★ 'म्हारा वाप' कविता कद ग्रर कीं मनगत में लिखी। 'ई' गांव में कठै ई कीं व्हैगो' म्हनै ग्रापरी जोरदार व्यंग्य कविता लागै– ग्राप कांई सोचो ?

—कवितावां रै बावत तो ज्यूं म्हैं ग्रापनै कह्यो, खुद कविता रो ई भरोसो कियो जावणो चाहिजै। वां रै लारै कवी री जो भी मनगत ग्रर जो भी दवाव रह्या होवै, वै जितरा कवितावां में ग्राप सूं ग्राप झलकै, उतरा ई काम रा है। म्हनै ग्रगर म्हारी ग्रब तांई री कवितावां रै बावत ग्राप पूछोला तो म्हैं इतरो ई कैवूंला के वै ग्राधी-ग्रधूरी कवितावां हैं। किसम-किसम री कचावटां वां में है, ठौड़-ठौड़ टूट ग्रर झोल ग्रायोड़ी है वां में। ग्रा होय सकै के वां कवितावां रा राजस्थानी कविता रै वास्तै कीं उपयोगी पख भी रैया होवै।

★ राजस्थानी भासा में मौजूदा गद्य रचनावां री कांई स्थिती है ?

—गद्य विधावां री हालत ठीक-ठाक है। ग्रबार तो इतरो ई मानणों चाहिजै के भासा नै छापै रा संस्कार देवण री चेष्टा में हां। युग-यथार्थ सूं भी उतरो व्यापक जुड़ाव राजस्थानी रचनावां को कोनी ग्रर इण सब रा कारण है।

• • •

व्यंग्य–

ले लियो ना लाडू !

□

उमाचरण महमिया

परमपिता परमेसर ठालो हो। स्रिष्टी बणायी। पैंली जळ, फेर भोम, फेर जीव-जिनावर, अर 'अेकोऽहं बहुस्याम' रो ढोल फूलतो ई गयो, फूलतो ई गयो— अतरो फूल्यो कै फट'र खुड़कै सागै मिनख आ पड़्यो। फेर परमपिता परमेसर ले लियो ना लाडू ! नित्ते होस संभाळता ई ईस्वर री तो वैकूंठी काड दी।

भस्मासुर री तपस्या सूं भोळो संभू रीझगो। वर दे दियो— जींरै सिर माथै हाथ धरेलो, वो भसम हो जावैलो। वर दे'र ले लियो ना लाडू ! भस्मासुर रो हाथ सिवजी रै सिर कानी ई उठ्यो।

दसरथ रै पतझर मांय कोंपळ फूटी— कैकेयी। वाचा दे दीन्या— रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाई। ले लियो ना लाडू ! प्राण तो परलोक चल्या गया अर भू-बेटा वन में।

अेकलव्य द्रोणाचार्य नै बोल्यो— गुरुजी आग्या द्यो। गुरुजी आज्ञा दी— 'गूंठो दे दे।' चेलको ले लियो ना लाडू !

सोमनाथ मंदिर रा पुजारी-पंडा देस रै रजवाड़ा सूं बोल्या— काळ रा बी काळ तिरपुरारी री तिरसूळ गजनी री छाती फाड़ ल्यावैली। रजवाड़ा री आंख्यां फाटी री फाटी रैगी। तलवारां री मूठां सूं खाडा पड्योड़ी हथेळ्यां में। ले लिया ना लाडू !

अंगरेज आया। बोल्या–विणज करांगा। सौदागर सौदै में दिल्ली रो तख्त ई ले लियो। दिल्ली रा बादशाह के लियो ? लाडू ?

26 जनवरी 1950। भारत गणतंत्र बण्यो। थानै-म्हानै वोटां रो अधिकार मिल्यो। वोट सन्दूकची मांय नईं गेरां जद तक तो धणी ई पूछ रैवे। फेर के ले लेवां ? लाडू ?

लाडू मिलता ईं गणेस जी लट्टू हो ज्यावै। रिध-सिध तक नै भूल ज्यावै। इवी तक म्हे जिण लाडुआं री बात कररया हा वै लाडू मिलता ई रिध--सिध मिनखां नै भूलज्या। ईं नै कवै असली संतुलन !

बडोड़ो भायो घणो ई हुसियार। संसकिरत

में आचार्य री उपाधि ली । पण अंगरेजी कोनी पढ़ी । किणी ओ'दै सारू 'अपलाई' कोनी कर सक्यो । प्रायना-पतरां कानी कुण देखै हो ? जमानै कानी सूं आंख्यां मीच'र ले लियो ना लाडू ! कोई छोरी हाळो आवै जणा पैलो सुवाल ओई पूछै – 'भायो किण सरविस में है, पोस्टिंग कठै होयी ?'

म्हे आज वी वडोड़ै भायै री सगाई रा लाडुआं री वाट में हां ।अेक छोरी हाळै नै भायो पूछ्यो— क्यूं सा अंगरेजी में लाडुवां नै के कैवे ? छोरी हाळो बोल्यो- छोरी नै पूछ'र बताऊंला । अर वो मुद्दै खातर ल्यायोड़ा लाडू जद पाछा लेग्यो तो आज ताणी बावड़्यो कोनी । सायद वीं री एम. ए. पास छोरी नै वी लाडुवां रो मीनिंग डिकसनैरी में मिल्यो नीं ।

वडोड़ो भायो आड़ोस-पाड़ोस रा सै टाबरां रो 'वडोड़ो भाया' कुवावै । सो जुवान वी वां नै 'वडोड़ो भायो' ई केवै । म्हे वी सूं कद में अेक मीटर अर उमर में ढाई वरस बड्डा हां, पण उण नै तो वडोड़ो भायो ई कै'र बतळावां । वडोड़ै भायै रै बाबाजी रो नांव छोटेलाल होणै सूं घर'र आड़ोस पड़ोस री लुगायां 'वडोड़ै भायै' न कदे छोटका, छुटक्या कै ई नी सकी । बाबाजी रो नांव बाबा जी रा मां-बाप 'छोटेलाल' काड'र ले लियो ना लाडू !

खैर अेक दिन हूं छोटेलालजी री सेवा में हाजर हुयो । मीठो खायां हफता ही हुग्या हा । चीणी रो रासन होरचो हो । बजार में चीणी अंधेरै--उजाळै मिल तो जाती पण सात रिपिया किलो । सो म्हे वडोड़ै भायै रै बाबाजी उर्फ छोटे-लाल जी रै चरणां में धोक खाय'र बोल्या- बाबोजी, थे लाडूड़ा कद खुवावोला ?

सुणतां ई बाबोजी बिदक्या अर आफरो आयेड़ै ऊंट री ज्यूं उछळ'र बोल्या- म्हारै सूं भी बुड्डा-बुड्डा हाळी राम जी नै गच्चो देरचा है । खावेलो आज ई लाडूड़ा ! लाडूडा रो घणो चाव है तो ग्यारो-बारो तेरै घरका रो कर ले ! हुँह, खावैलो म्हारा लाडू ! सरम कोनी आयी ओड बड़ै मिनख सूं टींचणी करतां !

छोटेलाल जी सूं लाडूड़ा मांग'र म्है ले लिया ना लाडू !

लाड सबद मूठियां सूं गोळ-गोळ होय'र लाडू हुयगो । मूठी बँधीना'र लाडू बँटचा ना ! गीगलो जलम'र मूठी बाँधै सबसूं पैली हुआँ-हुआँ करतो घर भर री मूठियां लाडू बणाणै-बाँधणै-बाँटणै में लागज्या । फेर जात-जड़ूलो, फेर जनेऊ-टीको, फेर मेळ-बिदोरी, लाडू ई लाडू !

हिन्दू समाज जिन्दगी नै जितरो लाड लडावै मौत वी उतणी ई लाडेसर । ग्यारो-बारो, छमाई-बरसी बिना लाडुवां कै फीकी ई रैज्या ! अर पिंडता कै तो दोन्यूं हाथां लाडू : जलम-मरण इकसार ! क्यूं ? क्रिसन जी सूं सुणो –

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नाय भूत्वा भविता वा नो भूय:
अजो नित्यं शाश्वतोयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।

आत्मा अमर तो लाडू अमर। हाथां सूं लाडू नीं फूटै तो मन रा फोड़ ल्यो। वेटी रै व्या रा लाडू थोड़ा मैंगा जरूर पड़ै पण जुवान डावड़ी घरां बैठ्योड़ी ज्यादा मैंगी पड़ै। सो बिचारो बापड़ो मैंगा-सैंगा लाडुवां रै बदळै जल्दी सूं जल्दी बीं नै परायी करण री सोचै। डावड़ी मन ई मन लाडू फोड़ै – पिया रै घर जाऊंली लाडू सो ई मीठो भरतार मिलैलो, सासू-सुसरो द्योर--जिठाणी, देवर--जेठूता म्हानै लाडू री जींया हाथां राखैला। पण सासरै में पग धरता ई सासू-सुसरै सूं मिलै कमती दायजै रो ओळमो, द्योराणी-जिठाणियां री फवतियां अर देवर-जेठूतां रा सूज्योड़ा थोवड़ा। डावड़ी नौ म्हीनां तो जाण बी न सकै कै जुआनी कीं नै कवै, बालम सूं रूसणां-मनावणां के होवै, घर अर सासरै में के फरक होवै – अर दसवैं म्हीनै जा पूगै जच्चाखानै में। दायी दरद सूं बळबेटा खाती बीनणी सूं पूछै-ले लियो ना लाडू?

लाडू रै बारै में म्हानै अेक सुण्यो-सुणायोड़ो चुटकलो याद आवै। गोधळी रै फेरां पाछै सजन-गोठ होरी ही। मांडै बैठी लुगायां बींद रै घर-परिवार नै गा-गा कर गाळ्यां परोसरी ही। बींद रो बाप सजनगोठ री पंगत में जीमरचो हो। जिमाणियां जाणग्या कै बींद रो बूडळो बाप रातीन्दै सूं लाडुवां रो सुवाद तो ले सकै पण देख नईं सकै। सो बीनणी रो मजाकियो भाई 'लाडू ल्यो सा–लाडू ल्यो सा' जोर-जोर सूं बोलतो बींद राजा रै बाप री पातळ मांय अेक गोळ-मटोळ बाठो घालगो। बूडळो घणो ई जोर लगायो पण लाडू हाथां सू तो कोनी फूट्यो। क्यूं झाळ मारतो अर क्यूं मसखरी सारु बींद रो बाप 'बो लाडू' ठा'र गीत गाती लुगायां कानी फींक दियो अंदाज सूं। बो 'लाडू' गीत गाती बीनणी री मां रै माथै पर पड़चो दैड़ दे सी! मावड़ी माथो पकड़'र बार घाली–फूटगो रै!

बूडळो बोल्यो–'कुण सो हलवाई बणायो हो, म्हारै सूं तो कोनी फूट्यो म्हाटो।'

लाडू री जघां बाठो परोसणियो ले लियो ना लाडू!

• • •

मिलणो गधां नै अेक वरदान रो

☐

वी० एल० माली 'असांत'

संसार में सै जीवां नै आराम सूं जिन्दगाणी गुजर-बसर करतां देख गधां में अनायास चेतणा आई । वै एक सम्मेलण बुलायो । इण सकल संसार सम्मेलण मांय दुनियांरा सगळा गधा भेळा हुया । सम्मेलण में गधा की मौजूदा स्थिति माथै गम्भीर विचार-विमर्स हुयो अर पछपोछड़ी में ओ निरणै लिकीज्यो कै सगळा गधा मिलर तपस्या करैं । निरणै मुजब तपस्या सरू हुई । सगळा गधा आंख मींचर बैठग्या अर तपस्या करै लाग्या । गधां री इण भगती नै देखकर सैं सूं पैलां भोळा-नाथ परसन हुयर परगट हुया । अर बोल्या—मैं आप लोगां री तपस्या देखर बड़ो खुस हूं । थे थारो दुखड़ो मनै बतावो ।

अेक गधो बोल्यो, "महाराज, प्रिथ्वी पर सै लोग मौज करै, फेर म्है ही क्यूं लदां ? म्है लोग भोत दुखी हां महाराज, म्हानै इब दुख सूं बचावो ।

संकर भगवान गधै री बात भोत ध्यान सूं सुणी । वै सोच में पड़ग्या—विचारै गधां री बात सांची है । धरती पर सगळा लोग मौज करै अर गधा बिचारा लदता ही जावै ! ओ तो आं रै साथै भोत बडो अन्याव है ।······धरती रा लोग फगत गधां रै ही गैल पड़ मेल्या है, इण खातर अबै आंको दुख दूर करणो निहायत जरूरी है । संकर भगवान गम्भीर हुयर बोल्या, "आपरी बात वाजिब है ।" "जद ही तो आपनै अरज करी है, महाराज" एक गधो बोल्यो ।

"पण एक बात है भोळानाथ कीं सोचता थकां कैयो, "जे आप लोग भी मोज करण लागग्या तो इण धरती रो काम किण-विध चालैलो । आप लोग मनै इण बात रो गेलो बताद्यो, फेर मैं उपाय कर देसूं ।

भोळानाथ वात नै सुवाल मांय उळझा दीनी । अर गधां रै सामनै वड़ी विकट उळझण आयर खड़ी हुयगी- वै संकर भगवान नै कांई गेलो बतावै, कियां बतावै ?

गधा मिलर इण गम्भीर विसै माथै गैरी बतळावण करी । पण कोई रास्तो को दीख्योनी । अब के हुवै ? भोळानाथ हाथ आया अुया जासी । अेक गधो बोल्यो— अब रास्तो ओ हीज है कै कुम्हारां नै आपरो काम ट्रकां सू करण सारू कैय दियो जावै ।

सगळां गधा रै आ बात जचगी । इण वास्तै

वां में सूं अेक जणो भगवान संकर सूं अरज करी –भगवान आप म्हारो काम टूकां सूं लेवण वास्तै कैयद्यो । देखो तो सरी, म्हानै लोग वडा परेसान कर मेल्या है । म्हानै गडी रै ही जोतण लागग्या है, अव आप ही वतावो, म्हारो जीवणो कींकर हुसी ?"

अेक दूसरो गधो अौर वोल्यो, "महाराज आप घोड़ा गाडी, नारा गाडी अर भैंसा गाडी रा नांव तो सुण्या हुसी पण लोग म्हानै गाडी रै जोप'र एक नुवों आविस्कार अौर कर दीन्यो है– गधागाडी अौर बणाय दीनी है ।"

भगवान संकर नै आंरो दुख सही लाग्यो पण मुसीवत आ ही कै, जे अै लोग भी सुख भोगी हुयग्या तो फेर काम कुण करसी ? आदमी ज्यूं-ज्यूं समझवान हुवतो ज्यावै, त्यूं-त्यूं मैंनत सूं परै भाजतो जाय रैयो है । अठीनै विजळी री वजै सूं वळद हीज कमती काम करै लागा, जे अै लोग भी आळसी हुयर वैठग्या तो फेर वडी मुसीवत ऊभी हुय ज्यावैली । संकर भगवान सोच'र वोल्या, "मनै दुख है कै आप लोगां रै साथै अन्याव हुय रैयो है। लंवो सांस लेय परा वे फेरूं वोल्या, "सैं सूं बडो दुख तो इस वात रो है कै मैंनतकस जीव रो नांव लोगां गधो थरप दियो । आप लोगां रो नांव तो भोत ही सोवणो हुवणो चाहीजै हो । मूरख पंडतां री कुचमाद री वजै सूं आप लोग गधा हुयग्या, नहीं आप लोग गधा हो नीं । पण पंडतां रो भी के कर्‌यो जावै, वै भी मन में आवै सो ही नांव राख देवै । इयां करो, मैं थारो नांव कोई दूसरो राख देवूं !

"कांई महाराज ?"

"मैंनती राम"

"नांव तो सोवणो है महाराज, पण म्हे तो दुखी हां । म्हानै नांव नीं, आराम द्यो ।"

इतरै में विस्णु भगवान घिरता-फिरता अठीनै आयग्या । संकर भगवान रै सामै गधा नै देखर वै कनै आयर वोल्या– प्रणाम महाराज !

विस्णु भगवान मुळकै हा । संकर भगवान कैवै हा, "प्रणाम तो आछ्यो पण आ गधां री भी तो सुणो । अै विचारा वडा दुखी है ।" संकर भगवान आगै वोलता इतरै में धरमराजजी आय पूग्या । वां नै देखर भोळानाथ वोल्या, "धरमराज जी आपरो ओ काम आछो नीं है । आप आं गधां कानी भी कदे देख्या ? अै कित्ता दुख पावै, कदे इण वात पर भी विचार कर्‌यो ? थोड़ो तो आंकै साथै भी न्याव करो, इयां अन्याव कर्‌यां कियां काम चालसी ?

धरमराज भगवान संकर री वात सुणर चकराया– भोळानाथ आज कैय कांई रैया है । कीं सोचर वै वोल्या, "गधां रो अरथाव लोग मूरखां सूं करै, पण म्हारी निजर मांय अैड़ी वात नीं है । अै वडा समझवान जीव है, अर मौत दुनियां में समझदार री है, महाराज । इण वास्तै आप ही वतावो, मैं कांई करूं ? विस्णु भगवान वोल्या, "कीं तो करो !" "कीं नीं हुय सकै महाराज । मैंनत हर कोई रै बस री वात कोनी । मैंनत तो करणियां ही करैला ! धरती रो काम आळसियां सूं नीं चाल सकै ।"

"तो फेर आंकी तपस्या रो फळ ?"

"महाराज ! आंनै दरसण हुयग्या, ओ के कम है ?"

इतरै में एक गधो बोल्यो, म्हानै दरसण नीं आराम द्यो।

धरमराज सुणर बोल्या, "आराम हराम है। आराम री खावण आळा हरामखोर हुवै। धरती पर आप लोगां रै सिवाय सै हरामखोर है। आप लोगां री तपस्या रो फळ ओ हीज है कै आप लोग मैंनत री खावण आळा हो। अर म्हे लोग थारी मैंनत सूं वडा राजी हां।"

"तो महाराज मैंनत रो पुरस्कार र ?"

धरमराज सुणर चकराया, विस्णु भगवान ओटा सरक्या, पण संकर भगवान रै चिन्ता हुई– आं गधां नै के इनाम देवां ?

वडी ठाडी समस्या आयर ऊभी हुयगी ही। आखर में विस्णु भगवान बोल्या– घवरावो मतना, धरती पर आगै जुग अैड़ो आवैलो, जिण मांय मैंनतकस ही मौज कर सकैला अर वाकी सगळा भूखां मरैला। थे जाणो होकै दुख भुगत्यां ही सुख होवै।

गधां विचारा मानग्या। तीनूं देवता अन्तर-ध्यान हुयग्या।

विस्णु रै वचना मुतावक जुग वदळणो सरू हुयो। फोकट री खावणियां रा आया दिन खराव, मैंनत करणियां मौज करै लागा। पण गधा तो विचारा अवै भी दुख पावै हा। जद वै काठा दुखी हुयग्या तो वै फेरूं सम्मेलण वुलायो। अखिल विस्व गधा सम्मेलण में वो ही मैंन मुद्दो हो जिको पैलै मांय हो। पण अठै आ वात भी विचारण जोग ही कै आखर विस्णु भगवान री कैयोड़ी वात वांरै साथै की कर पूरी नीं उतरी। आपसरी में मोकळी वोल वतळावण कै पछै ओ निरणै लिकीज्यो कै फेर तपस्या सरू करी जावै अर अवकै भगवान सूं वरदान लियां विना वांनै जावण नीं दियो जावै।

गधां री तपस्या सरू हुयी। इण वरियां भगवान डर रै मार्‍यै सांकड़ा ही को घालै नीं, दूर ही फिरै। पण गधा भी म्हाटा आंख खोली ही कोनी। वांरा मालक वडा परेसान। भोत दवाई-पताई दिराई पण कोई असर ही को हुयो नीं। पछ-पोछड़ी मांय वै भी आखता हुयग्या। अव के हुवै। आखर भगवान नै ही लुळणो पड़्यो, क्यूंकै भगवान भगत कै वस हुवै। फेर इसा भगत तो मिलै ही कमती। भगवान परगट हुया। गधां आपरा वै सागी ही रोजणा रोया, पण भगवान आपरी मजबूरी परगट करी— कीं उपाय नीं दीखै। जद गधा ज्यादा ही दुख करण लागग्या तो भगवान पिघळगा अर वोल्या– जावो, धरती पर अव थां लोगां रो हीज राज हुवैला।

गधा वडा राजी हुया।

आखर विस्णु भगवान रो वरदान खाली थोड़ो ही जावतो। इण वास्तै धरती पर आयो गधातंत्र।

आ तो आप भी जाणो हो कै मैंनत रो फळ तो मिलै ही, जे गधां री ही मैंनत अळी गई तो फेर मैंनत नै वूझसी ही कुण ? इण वास्तै भगवान करै सो ठीक ही करै। लोगां नै गळत लागै, आ वात वीजी है। फेर लोग तो लोग ही है वै सोचै कमती, सुणै ज्यादा। इण वास्तै ही तो कैवत है कै अकल विना ऊंट ऊमाणा फिरै।

आखर तो आपनै मैंनत जिंदावाद कैवणो ही पड़सी। इनक्लाव जिंदावाद वोलणो ही पड़सी। वाह रै भाई गधातंत्र। तूं भी जीवतो रैय। सै जीवै तो तूं क्यूं मरै ? थारो कैवणो भी ठीक है कै वोलवाला रैवो अर अकल सूं काम लेवो। ठीक इयां ही हुवणो चाहीजै, क्यूंकै अकल सै वडी भैंस हुवै।

• • •

व्यंग्य–

घोबो

□

ऋस्नगोपल सरमा

माथो दुखणै अर डील वींझणै सूं अेक अजीव तरियां री तालामेली सी लाग जावै। मांचली माथै पड़ूं-पड़ूं करती देही नै चैन नीं पड़ै। माथो चक्कर खावण लागै अर निजरां रै ओळै दोळै लाल पीळा चितराम नाचण लाग जावै। ओ घोवो चाळणो है। घणो दुख देवै ओ घोबो। कई जणां रै तो घोवो चालतो ई रैवै। वीरवान्यां रो तो पाळचोड़ो रोग है ओ। घोवो मिनख नै आकळ वाकळ करतो उण रो सुख चैन अर सांचत पण हर लेवै।

घोवो मिनख रो आठूं पो'रां रो मीत वण्यां जावै। सिस्टी रो सैं सूं दयनीय जीव-मिनख। दिनूगै सूं रात लगां खटतो जूझतो मिनख। पेट लिवाड़ सारु हावाजूझ··· परिवार पाळणै सारू ताफड़ा तोड़तो। घोवो चाल्यां ई जावै। इण सूं मुगट कठै? कुण सो सांग कद ल्याणो, अफसर नै कियां पटाणों, संगळियां नै कियां रिझाणो, किण जुगत सूं वेसी सूं वेसी करड़ै कागदां री नेड़ास कवाड़णो? किण तरियां जूण री तार तार गुदड़ी मांय आंटचां रा डोरा घालणा?······

आदमी भींभरी होयां फिरै। गरीवी रो घोवो घणो जवरो। इण रो इलाज कठै? इण घोवै नूं घैळीज्यो मिनख गंडकड़ै री तरियां पूंछ हलायां जावै। रात दिन गुलामी रा गूमड़ा कुळै। उण रै विगसाव री मोटी-मोटी वातां होवै। योजनावां विलमावै, नेतावां अफसरां रै तो भूत कुमावै पण गरीवदास उणीज तरियां कड़का काढै। मजूरी भी उण नै सुख सूं कुण करण देवै? सैसूं खसम··· वेगार अर मुठ्ठी चांपी। छेवट चोरी जारी मांय भी उण री सिकाई पैली होवै। वापड़ो गरीवी रो पट्टो राम रै घरां सूं ल्यायो है। इण रो धणी धोरी कुण? इण री भूख तो चुनाव रा ठेठर वणा'र रैयगी। कागदां मांय भूख मिटचां जावै पण सांचलां मांय···नीं कीं ई नीं कैवणो भाया। नीं जणा राज रै घोवो चढ जासी। पछै वै विरोध्यां नै गाळ भेळ अर जूतमफजीती री ओखद लेय नै ईज घोवै नै थामैला।

म्हारो अेक जाणकार है। झांझरकै सूं आधी रात लगां उण रो काम भाटा भिड़ावणै रो रैवै। जद लगां दोय च्यार भायला'क जाणकार आपो-

परी मांय नीं भिड़ै उण रो ग्रामलो ह्रचो नीं होवै। उण री रोटयां ठालो बैठयां गळै कोनी। नारद पणै री पोळ्यां पूग्यां विना उण रै घोवो चाल्यां ई जावै।

साधु, फक्कड़, पंडित ग्रर पीर इज नीं पण ग्रापणै सैंग जणां रै दूजां नै सुधारणै सारु दरद चालै। मसीहा ग्रर पैगम्बर वण्यां ग्रापां मांयीनै उपदेस रो काढो उकाळां। क्यूं क थानै ईसा, गांधी ग्रर कबीर वणणो पड़सी नीं जणां धरती पताळ मांय धंस जावैला। म्हानै तो थारा तुणका तीर सा दीसै। वेद, सासतर ग्रर दरसण री उकाळी थानै प्यायां विना म्हारै तो ग्राफरो ग्राय जावै। क्यूं 'क म्हानै वैकणै रो रोग है- ग्राफरो घणै वेग सूं चालै। वखाण वधारयां विना म्हारै घोवो घमेरयां ईज जावैला।

हळड़...हळड़...ठा पड़ै'क घणकरा घोवा कैन्सर ग्रर दिल रै रोगां सूं भी घणा घातक ग्रर लाईलाज होयग्या है। काळजो धक-धक करै, जी घमेरै ग्रर हळड़...हळड़। मांयली ग्रवखायां वा'रै ग्रार पड़ै। घोवो जिण सूं मिनख री लोभ-विरत वध्यां जावै...घुरड़-घुरड़ खावण री हवस पांगरयां जावै। वापड़ी व्यावली वीनणयां इण रो सिकार वण्यां जावै। ग्रो 'इन्फेक्शन'...ग्रा डाकण-तिरसा उण रा मुघरा सोनल सुपना रो भख ले लेवै। उपेखा, तिरस्कार ग्रर पिसतावै रा घोवा उण भोळी-ढाळी छोरयां नै जीणै नीं देवै। उण री सुरंगी मद भरी मनसवां रा चोड़ै ईज मिणिया मोस्या जावै। ल्यो ग्राछी तरियां जोवो सोवणै सरूप समाज रै सिरैमोरां री मांयली काळस। इतरी उल्टयां करै पण इण रो मांयलो वगदो कदै ईज नीं नीसरै। घोवो घमरोळ मचाय दीनी।

घोवो ग्राप ग्राप रो......पण ग्रेक दूजै रै नुंवै सूं नुंवो रोग लाग्यां जावै। धन, जोवन रो घोवो मिनख नै वांदरै री तरियां नचायां जावै। सांवठै डील रो घोवो हर कोई नै दारासिंघ वणा'र उण रै मद री मछल्यां उभार देवै। सोवणापै रो घोवो किणी गजवण री कसमसांवती साधां नै वम्बई री राख छणार कोठै ऊपरां चढाय देवै। न्यारा न्यारा घोवा। ग्यान रो घोवो चढायो मास्टर नुंवी पीढी री ग्रनास्था नै भ्र्याई देवै ग्रर स्टूडैंट विरोध रो घोवो चढायां जूना मापदंडा रा माथा फोड़यां जावै।

लिखणै रो भी ग्रेक घोवो ईज है। मैं तळसूं मळसूं करतो विचारां री विक्स माथै थेथड़यां जावूं। ग्रै 'ग्राउट डेटेड' सवदां री टिकड़यां कठै लगां सांयत देवैली? नुंवी कथणा सारु इण ग्रौचाट ग्रर उकळाट रो घोवो वध्यां जावै।

• • •

रोसनी रा जीव

□

मनोहरसिंघ राठौड़

बात वां दिनां री है जद ब्याव-सावां, जलूसां, निकास्यां में बिजळी रा जनरेटर नीं हा। ट्यूब-लाइटां, रंग-रंगीली झिलमिल रोसनी नै लियां चालती मोटरा नीं ही। कोरी-मोरी गैस बत्यां मिनख री जूण जीवता मजूरां रै माथै डिगमिग चाल सूं चाल्या करती। जमानो बायरा साथे झोला खातौ फटकारा दियां जावै है। मिनख कठै रो कठैई पूगग्यो। पण! म्हारै कस्बै में आज तांणी वै ही गैसबत्त्यां आंणै-टांणै काम लिरीजै, जलूसां, निकास्यां री जरूरतां पूरी कर नै सोभा वढावै। मिनख मरता रैवै फेर भी बिस्याई चेरै-मोरै रा मजूर कांई ठा कियां जलम्यां जावै? अै नीं जलम्यां गैसबत्त्यां कुण उठावै?

मैं वीं नै घणां बरसां सूं जाणूं-पिछाणूं। वो आपरी निजरां सांमै जरूर आयो हुवैला क्यूं कै आप म्हारै कस्बै में पधारता रैवो हो। आप वीं नै जरूर जाणता हुवैला।

घासीरामजी सेठां रो बेटो बींद बण्यो घोड़ी चढ्यो मुळकै हो। निकासी री धूमधाम में आखो कस्बो उथल-पुथल व्हैर्‌यो हो। वो साथ हो। घणकरी बरातां, जलूसां में वो निगै आय ज्यावै। हांसतौ डगमगाती चाल में चाल्यां जावै हो। वो क्यूं हांसै हो? इण बात रो पूरो पुख्ताई सूं वीं नै खुद नै ठा नीं। हांसी रो मालिक वो नीं है। हांसी छोड'र पगां री चाल, हाथां री पकड़, मूंडा री हलगल, आंख्यां री दीठ अर कोई सी सरीर री हरकतां माथै वीं रो धणियाप नीं। लोग कैवै जियां चालै, बोलै, ऊठै-बैठै।

इण झिबळक-झिबळक करता संसार में वीं रो कुण? ओ सवाल खिड्योड़ी झूंपड़ी रा घोर-अंधार नै बिट-बिट ताकती वीं री आंख्यां में घणी वार ऊतरै। आसंग-पासंग ओ सवाल घेरा घाल लेवै। केई सवाल सूका-पाका सवाल ही हुवै वां रा पड़ूतर नीं हुया करै। जवाब ढूंढवारी कत्तीई माथाफोड़ी करो……घड़ी-घड़ी वो सवाल मिंदर रा टिंकोरा री गरणाट ज्यूं माथा में वटीड़ पाड़तो रैसी। जबाव नीं ल्हादै।

हां! तो वो हांसतौ डगमगातौ चाल्यां जावै हो। आंतरै लुगायां, छोर्‌यां रा रिमझोळा में व्हैती लटक-मटक नै तोर बांध्यां देखै हो। इयां थिर निजरां देखणौ वीं नै सांतरो लागै। सांतरौ भी कांई? आ वीं री आदत बण चुकी।

गैसवत्ती री हण्डो ऊचावरण री मजूरी तेवड़ी वां दिनां माथा में वळत लाग ज्याती। माथा सूं उठती भळां पगां तांणी पूग ज्याती। तैल री गैस सूं भोगनो चक्कर खातो। मजूरी मुगताय घरां ऊवारी वावड़्यां कुण टिक्कड़ सेकै ? पाणी गटक नैं सो ज्यातो। कोई-कोई वरातां में कुत्ता अोर भिखमंगां री पंगत-संगत में वैठ्या आ मजूरां नै साग-पूड़ी मिल ज्यावै। मिठाई रा तरळा लियां गाळ्यां रा लडीड़ उडातौ कोई भागी मिनख दो-च्यार लाडुवां रा खेरा वगाय ज्यावै। लाडुवां रा सुवाद में डच-डच डचका मारता अे भूल ज्यावै कै अवार गाळ्यां खळकाइजी ही।

माथा री वळत मेटवा रौ तरीको चंपलो अेक दिन वतायो– "यार ! तूं फुदकती परयां नैं देख्या कर। सारी तकलीफां मिट ज्यावैली।"

–"कोई खूंसड़ा तो नीं मारैलो ?" वीं रा इण डरपीज्योड़ा सवाल नै चंपलो हांसी में टाळग्यो- "अरै गैलसफा देखवा में कुण सो कसूर छै। तूं साव उल्लू छै।"

वीं नै वात रो पूरो पतियारौ नीं हुयो। डरतौ–संकतौ अो तरीको अपणावै लाग्यो। साच्याणी लुगायां री ताक-झांक में माथा री वळत री ठा नीं पड़ती। अब आ वीं री आदत वण चुकी ही।

हां तो वो मुळकतो चाल्यां जावै हो। वीं री हांसी होठां में फस्योड़ी रैयगी। लाग्यो जांणै कोई सडीङ्-सडीङ् करतौ चावुक फटकार्या हुवै– "अो हन्डे औरतों को क्या देख रहा है। पहले अपनी सूरत देख।" तैल फुलेल री खसवौ में उमगीजतौ अेक जणौ लुगायां नै छेड़तौ हीः-हीः खी–खी करतौ आगै वधग्यो।

वीं री अपरोगी सकल देख'र लोग बतळावण लाग ज्यावै। टावर-टोळी डर ज्यावै। जिण दिन सूरत वावत कोई कीं कैय देवै वीं रै काळजै करोत वैय ज्यावै। डील रा सगळा रूं ऊवा व्है ज्यावै। वीं दिन री घटना डोलर हींडै री गळांई आंख्यां सांमै गरण-गरण घूमण लाग ज्यावै। पुराणा घाव री चवक ज्यूं कोई पीड़ हीयै में उलरै। वैस्यावाड़ो भी पड़दा री अोट हुवै अर वीं री वेइज्जती वीच वजार व्हैगी ही। जद कद आ वात चेतै आवै वीं री आंख्यां आगै अंधारो पसर ज्यावै।

घटना घटी वीं दिन वख्सीस में मिली पुराणी कमीज में सिगर्योड़ो हो। घणां दिनां पछै सापती कमीज रो सिणगार हुयो हो। हन्डो ऊचायां वींद री घोड़ी रै साव सारै चालतो पोमीजै हो। वीं री वत्ती सूं वींद रो मुंडो पळकै– आ वात सोचतां थकां वो हरख्यो। घणी फोटूवां खींचीजी। वींद सारै वीं री फोटू खेंचीजगी व्हैला। लाला जी नैं कैय अेकर आपरी फोटू देखवा री सोची। इण विचार री चमक में हन्डा ऊचावण रो काम वीं नै इज्जत आवरू रो लखायो। नाचण वाळी वीं सूं ठीक दो गज आंतरी नाचै ही। जवानां भेळै ई वूढा-ठाडा अड़वड़ै हा। नाचण वाळी फिरकी री जियां फिरै ही। वो वडभागी मुळकै हो। चांण-चकै ही वीं री वत्ती भक् भक्र···र् करनै सफा मन्दी पड़गी।

वीं नैं लारै धकेलवा २-३ जणां उचकता

आया। वत्ती-उतावळी ठीक करवा री भरोसो दिरावण री वो कोसीस करी– "मालिक अवार ठीक व्है ज्यावैली !" वात पूरी हुयां पैली वीं सूं आधी ऊमर रो छोरो सिगरेट रो धूंवो फटकारतो गरज्यो– "ओ खुंसट बक-बक वंद कर, तूं पीछे मर !"

सिंझ्या सूं उफणता कोड मन में रैयग्या। काठो उदास व्हैग्यो। लटपटाइज्योड़ा पगां नै पटकतो लारै सिरकै लाग्यो। भीड़ री सगळी आँख्यां खैरी-खैरी देखै लागी, सगळी जीभां टोकै लागी।

ठेकादार री सगळी वत्त्यां सूगली है इण रो वो कांई करै ? इण साच नै कुण समझै ? अेकूं-अेक जणो आप-आपरो ग्यान छिड़कै हो– "हरामी पैसे पूरे लेगा फिर यह बुझने वाली वत्ती क्यों लाया।" "दूकान पै नीकां कोन्या देखी। तेरी आंखें फूटी थी क्या ?"– चुपचाप सुण्यां गयो। आं भला आदम्यां नै पड़ूतर देवण रो मतलब ओर गाळ्यां सुणो। आं करड़ा बोलां री मार मारीजतो हन्डो हेटै मेल्यो। ठीक कर्‌यो। पाछो उतावळो-उतावळो चाल'र वरात भेळो भिळग्यो। अब भीड़ रै लारलै पसवाड़ै चालणो पड़्यो।

वींद रै सारै वीं रो दुसमण गोरियो पूगग्यो। गोरिया नै आगै चालतो देख'र वीं रै तन-वदन में बास्ते लागगी। वीं रै आरै-सारै दारु रा लोर में झूलता वराती अड़थड़िया आगै वधै हा। कोई वीं नै आगै वधवा रो हुकम देवै हो, कोई लारै जावण रो कैय गाळ वकै हो। कोई हाथ पकड़'र झंझेड़तो अेक पसवाड़ै चालण रो कैवै हो। वो अचक-वचक व्हैग्यो।

रेजगारी री उछाळ हूवा लागी। वो सावचेत व्हैग्यो। लारलै वरस अेक अळवादी टींगर भाटो वगाय वीं री वत्ती रो कांच फोड़ दियो। वां तंगी रा दिनां में ठेकादार तीन दिनां री मजूरी काट ली। वेथाग गाळ्यां रा लांवणा दिया वै न्यारा घणां दिनां आधी भूख काढ नै घाटो पूरो कर्‌यो। ठेकादार सूं वदळो लेवण री आग ऊठी। किण नै पुकार करतो ? चुप हूय धंधै लागग्यो।

उछळता सिक्का टन्‌न् · न् वाजै हा। वो पूरो-पूरो ध्यान ऊपर राखतो सावचेती सूं आगै वधै हो। असवाड़ै-पसवाड़ै रा वराती दारु में वगना हुयोड़ा धक्कापेल मचा राखी ही। वीं रै ठोकर लागी ओर···वो धड़ीन्द करतो पड़ग्यो। हन्डो चकनाचूर व्हैग्यो। ताता तैल ओर कांच रा टुकड़ां सूं मूंडो झुळसीजग्यो। आंख्यां मिचीजगी। छुल्योड़ा गोडा, कूंणी नै मोड़'र ऊठवा री विरथा कोसीस करी। वीं रै ऊठ्यां पैली पढ्या लिख्या समझदारां री ठोकरां दनादन लागणी सरू व्हैगी– "हरामजादे आंखें खोलकर नहीं चलता, साला खा खाकर मुसटन्डा हो गया है, हमारे कपड़े विगाड़ दिये इनकी धुलाई तेरा वाप देगा क्या ?"

आप री वेथाग पीड़ नै भूल्यो वो गिड़गिड़ायो- "अरै ! मायतां भूल व्हैगी। माफी द्यो। पगां पड़ूं···रे···राम।" पगां पड़वा सारू आगै वधायोड़ा हाथां नै लोग पगां सूं खूंदता, रिगदोळता आगै वधग्या। वीच वजार पिटवा री पीड़ सूं वीं रो अंतस पींपळ रा पान ज्यूं डोलै लाग्यो। वो अेकलो पड़्यो रैयग्यो। आंतरै धूंमधाम सूं जाती वरात री झिलमिल रोसनी नै आंख्यां फाड़-फाड़ देख्यां जावै हो।

ठेकादार रा वाड़ा में जाय हन्डो जमा कराणी पड़सी, आ सोच'र धूजै लाग्यो— कसाई मा मैण री गाळ्यां खळकासी अर मारसी । हां ! गाळ्यां अर मार सूं कांई बीगड़ै है ? जीवड़ा······पीसा कत्ता काटैलो ?

उणमणी-उणमणो ऊठ'र पग ठरड़तो वहीर व्हैग्यो । हाथ-पगां रा चसकता घावां सूं वेसी पीड़ वीं नै आपरा दुसमण गोरिया बाबत सोच नै हुई— "गोरिया नै मोको मिलग्यो, मन मरजी री बातां भेळ-भेळ सुणाऽई । वीं रै सांमै नाड़ ऊंची नीं कर सकैला । गोरिया सूं कदे कम नीं हो अब आंख नीं मिला सकैलो । वींद सारै वत्ती लेय पूगग्यो हरामी ।" वीं रा दांत कड़कड़ावै लाग्या ।

वाड़ा में ठेकादार नीं हो । गुमसुम ऊकड़ू बैठग्यो । नौकर-चाकर च्यारूमेर भेळा व्हैग्या । वीं री बात सुण'र हांसता-हांसता आप-आपरा कामां में रुंझग्या । घावां सूं बगता रगत नै भूल्यो वो ठेकादार री नाराजी बाबत घड़ी-घड़ी सोचतो थर-थरावै हो । घणां नौकरां सांमें दुखड़ो रोयां अेक छोरो हळदी-घी रा फोहा ल्याय लगाया ।

ठेकादार आयो— "अरै मुर्दा तूं अठै कंई करै ? ओहो ओ नवोड़ो हन्डो खिडाय लायो । आज सांवठी वत्त्यां जोड़जै ही तूं अेक रो पापो काट न्हांक्यो । उठा इण खिल्ला नै । नुंवी ले'र आ ।" बीच-बीच में होळी-उतावळी गाळ्यां ठरकाई । वो नीची नस कर्‌यां सुणतो रियो । पगां पड़ग्यो ।

—"जा जा ! म्हारो टेम खराब मती कर । अै वत्त्यां स्याफ करवा । पछै हिसाब नक्की कर देऊं ।" ओ हुकम सुण'र काम लागग्यो । अेकूं अेक वत्त्यां री झाड़ापूंछी करवाय उठ्यो जद रात रा दो बज चुक्या । घावां री पीड़ सूं वेसी कड़्यां करकै लागी । आखो डील दूखणा री जियां दुखै लाग्यो । भूख अर पीड़ में बगनो हुयोड़ो घरां वास्तै वहीर व्हैग्यो । ठेकादार पंद्रा दिनां री मजूरी काटसी, इण फैसला सूं जीव नै नेछो आयो । चलो वत्त्यां री फिरी में सफाई कर-कुरार ठेकादार नै मना लियो । नहीं जणां वो आगै सारू काम देवण री सफा मना कर दी । काम बिना काया नै भाड़ो कियां दिरीजै ? चलो पन्द्रा दिन पूरा व्हैतां कांई जेज लागै ·····वीं रा सूका पपड़ाइ-ज्योड़ा होठ अेकर हांसण रै मिस हाल्या । आंतड़्यां तांणी रा दरद सूं मतैई होठ पाछा भिचग्या ।

ठेकादार नखरा क्यूं कोनी करै ? सहर रा सगळा भिखारी ओ धन्धो तेवड़ लियो । दिन में भीख मांगो रात नै हन्डा ऊचावो । आं कमसलां रै कारण वेइज्जती सहन करणी पड़ै । मजूर टक्का धड़ी व्हैग्या । इयां मन में उणमणो कुणा-रतो-कुणारतो वच्योड़ी रात काढ दी ।

चेहरै रो भो विगड़ग्यो । दूजा मजूरां नै लोग छांट'र पैली ले ज्याता । सगळां सूं पछै दया दिखाय वीं नै ले ज्यावै । वीं नै चिड़चिड़ाट इण बात री हुवै कै पइसा मेनत रा मिलै ईं में दया री कठै जरूरत पड़ै ? रोसनी वत्त्यां सूं हुवै पण लोग मजूरां रा चेहरा-मोहरा देख नै क्यूं ले ज्यावै ? आ बात वो आज तांणी नीं समझ सक्यो ।

वत्ती माथै ऊचायां-ऊचायां कई वार वीं रो

जीव हिबोळा खावण लाग ज्यावै । खुद रै व्याव बावत सोचण लागतौ······"मनै निरभाग नै कुण छोरी देवै ? कांई ठा छोरी किसीक आवै ली ? घर बसायां सत्रा जिन्सां जोइजै । आवाळी नै कांई खुवास्या ? रोटी रा अवार ही फोड़ा पड़ै ।" आं विचारां री घोळ-मथोळ में मन निसकारा न्हांकै, कणां हरखै । खुसी रा अै इण्या गिण्या छिण वीं रै हक में नी है– भीड़ मांयनू' कोई आं छिणां में भंभोड़ नै कैय देवै– "अरै आख्यां खोल के चाल । मांय पड़सी के मेरा यार । यो हन्डो सिर पै गेरैगो के ?" व्याव री कंवळी वातां धड़िन्दो खाय आंतरी जाय पड़ै ।

जणैं-जणैं नै घोड़ी चढ्यो देख'र काया कस-मसावण लाग ज्यावै । आंख्यां सांमै नाचता-गाता, उछळता, मौज-मस्ती करता लोग अर वीं री खोपड़ी माथै भक् भक् करता वळता हन्डा रौ भार । बदरंग चेहरो हुया पछै व्याव रा सगळा सवाल लारै रैयग्या, कठैई गमग्या । व्याव बावत सोचणौ विरथा लखावै लाग्यो । टावरपणै में मां लाड में पोमावती– सुन्दरलाल, ओ वेटा सुन्दर-लाल आव रै ! थारै जिस्यो फूटरो कुण ?

वां दिनां वो अेकलो व्हैतां पांण दरपण सांमै जाय ऊवो व्है ज्यातौ । घड़ी-घड़ी खुद नै निरखतो– "साच्याणी मैं फूटरो हूं कांई ?"

–"वडो हुयां म्हारो लाडलो अफसर वणसी," मा इयां कैय देती, आ सुण'र आखैं दिन उछळतौ । राजी व्है ज्यातो ।

अब नांव कांई ठा कठै गमग्यो ? कदे-कदे वीं रै काळजै अेक भैम ऊठै······साच्यांणी वीं रौ कोई नांव है कांई ? हरेक ओ ए ! ओ, सुण रै इयां कैय वतळावै । कोई-कोई ओ वुड्ढे, ओ ठूंठ, ओ हन्डे कैय वैठै वीं दिन तन-वदन में वासत्ये लाग ज्यावै । रोटी नीं भावै । नींद नीं आवै ।

इण स्यान वायरा धन्धा नै वो खुद अपणायो हुवै जिसी वात कोनी । खुद रै पसंद री जिंदगानी चुणवो हर कोई रै हक में नीं हुवै । थोप्योड़ी जिंदगी जिंदगी कियां व्है सकै ? वैठ-वेगार भलांई कैंवीज सकै । वीं रो न सरीर है और न सरीर री कोई हरकत माथै धणियाप । उट-पटांग नावां सूं वतळाइजवा नांव तो वेनाम व्हैणो ठीक ।

आप लोग तपती सड़क माथै उल्टा पड़्या तिलचट्टा री हालत सूं वीं री तुलना कर सको हो । वो जियां जावै है । वींद सज्या-संवर्‌या पर-णीजता जावै है । वो देख्यां जावै, देखतो ही रैवै । उमस, तपती गरमी में माथा उपर वळवळतो हन्डो ऊचायां चाल्या जावै । वो हळवां-हळवां सिलगतौ राख व्हैर्‌यो है । वो क्यूं पैदा हुयो ? ओ सवाल किण सूं करै ?

• • •

कुरीत

□

चेतन स्वामी

सनिवार रा बैंक रो काम श्रौर दिनां सूं बेगो ई सलट आवै– विगांस सलट कांई जावै– सैंग बाबू आतै-जातै रा हुवण रै कारण इण दिन बेगा ई टावरां भेळा रळना चावै– इण खातर जरूरी-जरूरी काम सलटावर बाकी छिटपुट काम सोमवार खातर पैंडिग राख देवै क्यूं 'क अगलो दिन दीत-वार हुवण सूं वै काम हू तो इयां ई को सकैनी–खैर।

शनिवार अर दीतवार टाबरां में बितायां पछै सोमवार रा तो भांभरकै ई घूंपरळो छालनो पड़ै। क्यूं'कै हूं जकै कस्बै री बैंक री नौकरी करूं उण तांई दिनुगै बेगो पूगण रो साधन छव बजी आळी ट्रेन ई है। छव बजी आळी ट्रेन दिल्ली सूं आवै-उण रै पछै अगली ट्रेन साढ़ी दस बज्यां आवै। उण सूं पूगण रो सवाल ई नीं, क्यूं'क बैंक रै टैम तो वा अठै आवै- अर रही बात बस सूं पूगण री-सो पूछो ई क्यूं– राम रुखाळो है– अेक तो टैमसर आवण री गिरांटी कोनी अर दूजै म्हारै जिसा नितरा हिंडा खावणियां नै बस री अेम. एस. टी, ई को पोसावै नीं। ट्रेन री अेम. एस. टी. रो वापड़ी रो लागै ही कांई है। बस री अेक महीणै री अेम. एस. टी. में ट्रेन री साल भर री जात्रा हुय जावै।

रात मोड़ै तांई हताई करणै सूं आज आंख कीं ज्यादा देर तांई लागगी। उठ्यो तो देख्यो–छव बज चुकी ही। मरा दिया– आज तो बसड़ी सूं ई जावणो पड़सी दीखै– लागग्यो दीसै रुपिया आठ रो बटीड़, पण कांई ठा ट्रेन लेट-सेट ई हुवै– थोड़ी घणी लेट तो हरमेस ई हुवै ई है।

घरवाळा माथै कूड़ो-साचो भींकतो– सगळा नितकरम करतां कुल पन्द्रह मिन्ट लगाया अर ले साईकळ ठेसण पूगग्यो। गाडी तो पूण घंटो लेट है ठा लाग'र ध्यावस हुयो– खैर सल्ला मौड़ो उठ'र ई टैमसर पूग तो ग्यो। कई देर रा आळा टोळा रै पछै ठेसण री बारलै पासली दूकान सूं पान खाय'र आयो जितै में तो गाडी स्टेशन कनली गोळाई सूं मुड़'र मुंहडो निकाळ रैयी ही।

गाडी में म्हारो कायदो है कै हूं हरमेस ऊपर वाळी सीट जोवूं– ठाठ सूं सोंवतो जावूं। दिन उगणवाळो हुवण रै कारण ट्रेन रै अठै आंवतां-आंवतां लोग हाथ मुंहडो धोयनै नीचै वाळी सीट माथै बैठ्या हुय जावै।

अेक खाली सो डब्बो देख'र हूं उण में चढग्यो। ऊपरवाळी सीट माथै चढण खातर मतो उमावै ई हो कै इतै में किण ई बतळायो–

—"कियां बाबूजी ?"

हूं पाछो फुर'र जोयो। बतळावण आळै रो चेरो पैचाण री कोसिस करी।

—"कियां ओळख्या कोनी कांई ?" फेर बण खुद ई समस्या सुळझा दी— ओ तो मैं हूं रामेसर— दुळचासर आळो।"

अबै मनै ई चेतै आयग्यो— अरै हां लारलै दिनां दुळचासर में लौन बांटण खातर गया हा जणा हजार रिपिया रो लौन इणनै भी दियो हो— "ओळख तो लियो भाई पण कांई बात है ओ-ऽऽऽ" मैं उणरै मु'डायेड़ै माथै अर सफांचट दाढ़ी मूंछां कानी जोय'र कैयो।

वो मुळक्यो— "ओ तो हरद्वार जाय'र आयो हूं।"

हूं ई मुळक्यो— "तो कांई लौन इण खातर ई लियो हो ?"

वो हँस्यां बिना को रैय सक्यो नीं— "लियो तो घणो ई को हो नीं पण अबै इयै खातर ई समझो।"

"कुण हा ?" मै बूझ्यो।

"थे समझो जकां में कुण ई नीं।"

"तो कोई पारको पुन्न कर रैया व्होला— बार गांव में तो थांरै रीत हुवै कै कोई थांकल हुवै तो फूल को घाल सकै नीं— कोई प्यारो सैण हुवै जको घाल आवै। फूल जितै वारणै पड्या रेवै— घर री पुन्याई को वधै नीं— गांवरां री आ मानता भळै हुवै।" "ओ तो थांरो कैणो साचो, गांव में रीता तो इसी ई हुवै।" वो इतो सो कैय'र चुप हुयग्यो। उणरै गळै में घणी सारी गंगाजी री माळावां पड़ी ही। कनै ई सीट माथै लीक-लिकाट्यां काढ्योड़ी एक बैंत पड़ी ही। एक डबियो गंगाजळ सूं भरियो पड्यो हो। अर एक थैलियो ई पड्यो हो। उण थैलियै में हाथ घाल्यो अर लफैक चावळां री फुल्यां अर मियोड़ा मखाणा काढ्या— "ल्यो थे भळै कणै मिलस्यो···परसाद······"

"पैलीपोत मनै ई ?" हूं सकतो सो परसाद लैय लियो अर उण मांय सूं थोड़ो-थोड़ो तीन च्यार कनैली सीट माथै बैठ्या गांवैड्यां नै बांट दियो।

गांवैड़ी परसाद लैय-लैय'र आपरै खुंजां में घाल लियो। अर सगळा आप-आप री जेब सूं अेक-अेक रिपियो निकाळ'र रामेसर रै खोळां में धर दियो। रामेसर नां नुकर करी— "अरै ओ कांई करो माइतां।"

—"नां लाडी ओ तो हुवै ई— अलबत हर री पैड़ी जाय'र आयो है— इतो पुन्न तो म्हे ई कर सकां— अर पछै थारै सूं सगळा बडा हां पगां लागै तो थारी मरजी है नहीं लागै तो कोई अणसर्‌यो को पड्यो नीं।" सगळा अेकै सागै केयो। हूं ई अेक रिपियो काढ़'र झट उणरै खोळां में धर दियो। गांव करै सो गैली।

रामेसर गांवैड्यां री बातां सूं संकग्यो। वो नीचो लुळ'र सगळां रै बारी-बारी सर पगां लाग्यो। जींवतो रै री सगळां आसीस दी अर पछै सगळां ई जै गंगा माई री बोली।

अजब हिंवळास हुवै गांव रां में।

बणीसर री ठेसण आंवतां ई सगळा गांवैड़ी अेकै सागै उतरग्या। अबै डब्बै में फगत हूं अर रामेसर दोवा दो रैयग्या। मनै बात करण रो कोई

मिनमिनो नीं मिन रैयो हो। रामेसर चुपचाप बैठ्यो हो।

—"किसां कोई मायनै में ही हो कांई ?" हूं मून तोड़्यो।

—"नहीं।" उण छोटो सो पड़ूतर दियो।

—"तो पछै ?"

रामेसर अबकाळै कोई पड़ूतर ई को दियो नीं।

—"किंयां बोल्या कियां कोनी।"

—"कांई बोलूं बाबूजी— बतांवतां ई सरम आवै।" रामेसर जाणै मंकै री नाड़ नीचै दबग्यो हो।

—"अरे था हरद्वार जाय'र आया हो आ बतांवतां सरम आवै कै फलाणै रा फूल घाल'र आयो हूं।"

रामेसर रो मुंहडो उतरग्यो। रोवणवाळो सो लाग रैयो हो अबै बो— "थां ऊं कयांरी सरम— थे अलबत पढ़्या-लिख्या हो हरेक चीज नै जाणो— ल्यो बताऊं······

अबै बो सीट माथै जम'र बैठग्यो। पगां री नड़ाबू धरती मोल'र पालथी मारली सीट माथै।

—"थे गांव में लोन बांटण खातर गया हा नी— उण रै दूजै ई दिन म्हारै हाथ सूं अेक ईन्याव हुयग्यो······हजार रिपिया थे दैय'र गया ई हा— हूं उण दिन ई मिल्या भूरजी रो ट्रैक्टर नोई कढावण नै खेत लेयग्यो। स्यानणी रात ही— रात नै अेक बजी तांई म्हारै बीघा चाळीस अेक जमड़ी सुधार नांखी। ट्रैक्टर माथै भूरजी रो छोटोड़ो बेटो लादू हो। लादू म्हारै ई मायनो है। तोई काढणै रै आधेक घंटे पछै लादू तावड़ करणी सरू करदी रै रामेसर अबै रुक्यां पार पड़ै कोनी— गांव ई चालस्यां— दिनुगै भळै लोकां रै जावणो है।

हूं ई पछै क्यूं रोकतो— कैयो चाल तो चाल थारै जचगी जणां। लादू नै ट्रैक्टर चलांवतां देख'र म्हारै ई जीव में आयगी। आधीटै आंवतां मैं केयो— लादू थोड़ो मनै ई चलावण दे यार। उण बरज्यो नीं तनै ठा तो है कोनी गैयरां-बैयरां रो। हूं जिद कर्‌यो ईं में पछै कांई भेद है, चलावै तो लुगाई रा जाया ही है नीं। हूं घणो कैयो जणा— सीधो सो गैलो जणा वो स्टेयरिंग हळावणी बता'र म्हारै कनै ई लारलै पासी बैठग्यो। सूंवो रस्तो हो कोई डर आळी बात ई को ही— रात रा रस्तो इयांई सुनो रेवै। ताळ आळै ऐरियै कनै आंवतां ठा नीं कठै सूं ट्रैक्टर रो हरड़ाट सुण'र चाणचक अेक चिमकोर गावड़ी आगै आयगी। म्हारै स्टेरिंग घुमांवतां-घुमांवतां ई गावड़ी रै ट्रैक्टर री सरड़ाट लागगी। स्यात गावड़ी रो पग इ टूटग्यो दीसै हो। लादू फुरती सूं ट्रैक्टर सम्हाळ लियो। उण जाड़ भींची— "जिद कर'र काढ़लियो नीं नाम।" उण ट्रैक्टर रोक दियो। दोवूं नीचै उतर'र गाय कनै आया। म्हारो मुंहडो धोळो हुयग्यो। आ आछी गिरह आई नीं। गावड़ी नै अठी-उठी देखी फोर'र— अेक पग में खोरसल्ल आयगी दीसै ही।

हूं लादू कानी जोवै हो। आप कानी देख'र उण केयो— "अबै म्हारो मुंहडो कांयी देखै— करो पाटा पोळी— अर दिनुगै वणी कीं कैयसी जको न्यारो— पैली ही रोयो हो नीं अे लकड़ा हरेक रै

तावै को आवै नीं– ओळखै है कांयी कीं री है आ धेन ?"

हूं नाड़ हलाई ।

"तो बैठ, उणनै वापड़ै नै खबर तो कर कै थारो धीणो सवायो कर आयो हूं ।"

गांव आया जितै झांझरको हुयग्यो हो । बूढ़ा-ठेरा नित-नैम में लागग्या हा । हूं पैलीपोत घरै नीं जाय'र गाय रै धणी हरजी नायक रै अठै ई गयो । हरजी नैं सारी हैस-नैस बताई । च्यार सौ रिपिया हर्जानै सरूप देवण रो केयो तो– अेकर तो वो थोड़ो किणतिणयो– पण पछै मानग्यो । पण हरजी रै मान्यां सूं कांई हुंवतो हो । दिनुगै पंचायत में मनै बुलायो गयो । सिरेपंच समेत च्यार पांच मोजिज आदम्यां केयो कै– "भाई रिपिया तो तैं हरजी नै दिया है, बाकी वीं सांसर नै कांई दीरीज्यो ।" ईं रै वास्तै लाडेसर वीं री सेवा तो तनै ई करणी पड़सी । बात भी वाजब ही ईं खातर मनै हुंकारो भरणो पड़्यो ।

अबै हूं नितउठ अेक कुंडै में पीळी माटी अर गोबर रो झारो कर'र लैय जांवतो अर गाय रै पग माथै उणनै बांधतो । विरखा हुयोड़ी ही । डचावड़ी-गंठियो वापरग्यो हो । हूं उठै ई ऐरियै सूं डचावड़ी-गंठियो उपाड़ ल्यावंतो अर उणरै आगै न्हांक देंवतो ।

म्हारै इण इलम सूं गावड़ी दस-बारह दिनां बाद कीं ससवीं हुंवती लखाई । पग री खौरसल में खासा फरक लखांवतो । हूं सोचतो अबै अेक दो दिन में आ डांगड़्यां सूं ऊंचायां उभी हुवण लाग ज्यासी ।

पण कैया करै नीं करम पतळा हुवै जणा को सेवा आडी आवै न कोई दवाई । अेक दिन दिनुगै झारो कर'र ले ज्याऊं तो आगै गावड़ी माथै चीलक्यां भूंवै । हूं देख्यो म्हारो ओ कांई विरतंग है । गावड़ती टांगड़्यां पसार्‍यां निढाळ पड़ी ही । हूं फुरती सूं आय'र नाक आडो हाथ दियो । पण मांय कीं हुवै तो आवै नीं । अबै झारो कीं रै बांधै हो । राम जाणै गावड़ी नै रातनै कोई अेरूकांटो लड़ग्यो हो'क कोई और कोई खेलो हुयो क ठा: नीं ।

दिन रा भळै मनै पंचायत में बुलायो । पंचां केयो– "भाइड़ा सेवा तो तैं लाई घणी ई करी पण कारी नीं लागणी हुवै जणां कांई हुवै । ठीक हू ज्यांवती जठै तांई तो मेनत रो ई काम हो पण अबै तो लाई रै पईसा लागण नैं ठोड़ हुयगी नीं ।" पंचां रो वणावटी अफसोस कीं कीं म्हारी समझ में आय रैयो हो ।

जद ही दूजोड़ो पंच बोल्यो– "अरै पईसा तो वळो लागो लूगो– छिमो लागग्यो नीं– दुनियां घणी जालम हुवै, खड़्या ई लोग गऊ मार री अमीणी मार देसी ।"

–"खैर आ तो है ई पण सांसर निमित करम कर्‍यां पछै अमीणी देवणआळै री किसी फुट्योड़ी हुवै ।" सिरेपंच कैयो ।

हूं सिरेपंच साम्हो हळको सो विरोध कर्‍यो– "माइतां गावड़ी तो भली चंगी हुयगी ही वा तो अेरूं कांटो······"

सिरेपंच म्हारी बात विचाळै ई काट नांखी–

"भोळो है रे तूं, जे गावड़ी नानग किरण आळी हुवती तो उणनै अैहड़ नांदो थोड़ो ई नड़तो–डांगरा गणा नावचेन हुवै ।"

मनै वां री बात मानणी पड़ी । पंचां-सरपंचां आगै नटण री हिम्मत री निमता हुवै । राजाजी रै रैणो'र हांजी-हांजी कैणो ।

गाय रो पूंछ गळै में घाल'र सगळै गांव रो चक्कर लगावणो पड़्यो अर पछै पंचवारी आळै गेजड़ै सूं लोगां मनै बहीर कर दियो । आज अबै थारै साम्हो हूं ।

"जबर फोड़ा पड़्या भई ।" हूं कैयो ।

"हाल तो कीं बाकी ई पड़्या है ।"

"भळै ?"

"बांसर रै लारै बाणा ई जिडावणा पड़सी । गंगेड़ा कर'र टावरां दूवरां नै जिमावणा पड़सी । सोच्यो हो बैंक सूं पईसा लैय'र कोई गावड़ती-गूवड़ती लेस्यूं पण लेंवतो कीं रै आपरी करमनंदियै में लिख्योड़ी ई नीं हुवै जणा ।" रामेसर री आंख्यां सजळ हुयगी ही । म्हारी समझ में आय रैयी ही कै मैं इणनै किणतरै रो ध्यावस बंधाऊं । आपरी भूल रो रिण इण गाय रै धणी नै पइसा दैय'र अर गाय री सेवा कर'र उतार दियो हो पण फेर भी उणनै इण तरै रा दण्ड भुगतावणा किण तरै रा रिवाज है ।

• • •

खून कुण को हुयो

□

राघव प्रकाश

घरां सूं फैक्ट्री तांई पोंचवा में ई म्हा हारगो। वयां फैक्ट्री कोई घणी दूर कोनै। कस्वा रा अेक पळसा में फैक्ट्री अर दूसरा पळसा में म्हारो घर। लम्वो-सो वज़ार पार कर्यो'र फैक्ट्री। अर म्हारा पग भी नठ्यां कोई तीस वरस ई चालेड़ा छै। पण हारगो। जयां चालतां-चालतां ई कोई पग सूजगा। फैक्ट्री में पोंचताई सेठ रो छोरो मिल्यो। खारी-खारी आंख्यां सूं देखर वोल्यो— "वेगो न आयो जावै तो लेवानै कार भेजद्यां कांई? जावा में तो अतरी हड़वड़ाट अर आवा में ज्यान निकळै छै।"

म्हां अणदेखी कर'र म्हारी काम करवा री जगां चलेगो। रोटी री गांठ ऊपर टैणां का कुन्दा सूं टांक दी। सेठ रो छोरो अव भी गुर्र-गुर्र कररयो छो या वात तो सही छी कि मूंनै टेम माळै आणो चाइजे छो। आठ वज्यां री फैक्ट्री छी अर म्हां सवा आठ वज्यां पोंच्यो छो। पण हालतांई मूंनै घड़ी री आदत कोनै पड़ी छी। असल में तो म्हां सेठ का रैगर रो वेटो छो अर वा मूंनै कई वार ईं तांई देर आवा सूं माफ भी कर चुक्यो छो। या फैक्ट्री लगावा सूं पैली सेठ खेती करै छो। दो-दो लावां चालती ऊंकै। म्हारो वाप ई ऊंकी लावां कै तांई चड़स वणा'र ल्यातो, फाट्या-पुराणा चड़सां नै गांठतो। सारा घरकां रै तांई जूत्यां वणा'र ल्यातो। म्हारै वाप के मरवा कै पांच-छै साल तांई म्हां भी ऊं को याई काम करतो रह्यो। सेठ पाछै खेती करवो छोड़दी अर या जूतां की फैक्ट्री खोलली। ईं कस्वा का वीस्यूं रैगर जूत्यां वणावो वन्द कर'र ईं फैक्ट्री में आगा। म्हां भी आगो। सेठ औरां सूं मूंनै पांच रुप्या म्हैना वत्ती माळै नोकरी भी दे दी। म्हां ईंठै जूतां का तळा काटवै लाग्गो। सिर्फ तळा काटतो सुंवारै सूं दिनथा तांई। जूतां रा न्यारा-न्यारा काम न्यारा-न्यारा आदमी करता। अर म्हां सिर्फ तळा काटतो। भांत-भांत री नांपां अर भांत-भांत रा तळा।

या वात कौनै छी कि पैली म्हारी वणायेड़ी जूत्यां विकै कोनै छी या टिकाऊ कोनै छी। आस-पास का गांव का लोग-वाग खूव सोक सूं पैर'र जावै छा। म्हारा घर री जूत्यां रो केई गावां में नांव छो। लोग-वाग खुद तो पैरतां ई, आप-आपका सगा-सोयां तांईं भी भेजता। न्यारी-न्यारी तरां की जूत्यां वणवाता लोग, खूव नाज-नखरा भी करता, नुक्स भी निकाळता पण फेर राजी हो-

होर पैर'र भी जाना। म्हारी टापरी कै आगानै रोजीना नया-नया लोग आता, नाप देता। रोजीना नयी-नयी जूत्यां का नया-नया मोज होता। लोग पैरता, अर मचक-मचककर चाकर लगाता। छोटा-छोटा छोरा जतरा जूत्यां न देखर राजी होता ऊं मूं ज्यादा तो वांका मोजां न देखर होता। नुगायां जूत्यां माळै तरां-तरां की चमकणी जरी लगवाती, चोवना चुभवाती। अर म्हां वांकी रंग-बिरंगा फून्दां की नांई चमकती आंख्यां न देखतो। अर मूं नै लागतो म्हां कोई छूं, म्हारा हाथां में कोई कळा छै, जस छै। म्हारी रांपी री धार माळै मूं नै गरब होतो।

फैक्ट्री में अब तांई सेठ आ चुक्यो छो। सीधो म्हारै कनै आयो। छूटतो ई बोल्यो– "काम करबा में मन हो तो कर, नहीं तो फूट ईंठा सूं। म्हां तो या सोचर राख लियो छोनै कि म्हाकाई रैगर को छोरो छै। दर-दर डोलैलो तो लोग म्हानै ई गैला कि घर का रैगर का छोरा नै भी काम कोनै दियो। थारो बाप भोगल्यो, म्हारै कोई काम पड़तो तो दिनुग्या पैली आतो अर आधी रात पाछै घरां जातो। अर तूं आठ बज्यां भी टेम मूं कोनै पोंचै। तड़कै भी देरी सूं आवै तो फेर भनांई आजयोई मन काम माळै।"

म्हारी आंख्यां चकरागी। म्हां मन-ई-मन बोल्यो– देरी सै कयां आंऊंलो सेठजी, देरी मूं आंऊंलो तो फेर जांऊंलो कोई ? म्हां कोई चमार देर सूं कोनै आतो पण कागा कयां न कयां देर होई जाती। नीचो माथो कर'र सुण लियो। सेठ चलेगो। म्हां जूता का रबड़ का तळा काटबै लागगो। मैं माळै-तळै काटतो जारयो छो। कुणको छै या तळो ? कुण पैरैलो ईं नै ? मूं नै कांई भी तो कोनै मालूम। न तो पैरवाळा नै मोसूं मतलब, अर न मूं नै पैरवाळा सूं। म्हां अर या तळो भलो अर या रांपी भली। म्हारी टापरी कै सामानै फून्दा-सी आंख्यां अर आंख्यां-सा बणेड़ा वू जूत्यां रा खोज ई फैक्ट्री की खट-खट में चिड़यां की नांई उड़गा। चिड़्यां का उड़बा का ई फर्राटां में रांपी टेढ़ी चालगी अर तळो टेढ़ो कटगो। चुप-चाप सबकी आंख्यां सूं बचार सिलोसन सूं चिपका लियो तळा नै।

धीरै-धीरै असी हवा चाली कि गोरी-गोरी चमकती जूत्यां माळै काळस छागो। जूत्यां अब जूतां तळै दबगी। चमड़ी सूं चमड़ी को सम्बन्ध ई बदळगो। चमड़ी दबगी अर ऊपर नै दूसरी काळी चमक आगी। या चमक गांवां नै भी भागी अर कम्पनी राज की नांई या फैक्ट्री राज चालगो। खट-खट, खट, खटाखट फैक्ट्री को राज।

टापरी का अेक कूणां सूं नया-नया चमडा री बांस आरी छै। सारो घर महकर्‌यो छै ऊं बांस सूं। पाड़ौस्यां नै भी पतो पड़गो कि आज म्हारा घर में नयो चमड़ो आयो छै। नया चमड़ा की नयी बांस म्हांका घर में लछमी की बांस छी, ऊं बांस सूं ई कारोबार चालतो, ऊं सूं ई लोगां की आंख्यां नाचै छी। अर आज वा म्हांका मोहल्ला की वा बांस सिमटर ई फैक्ट्री में बन्द होगी। मोहल्लो उजाड़ होगो अर म्हे म्हांकी ऊं बांस मूं ई ई फैक्ट्री में सड़गा।

सेठ वयां जात मूं ऊंचोई छै पण फैक्ट्री

खोलली, भलांई जूता री ही हो। फैक्ट्री तो खोलली पण म्हां रैंगरां सूं तो अब भी परहेज ही करै छै। चमड़ा सूं भी परहेज करै छै अर ऊँ की बांस सूं भी, पण बांस रा रुप्या मूं कोनै। देखतां-देखतां म्हारी रांपी विकगी अर रांपी की चमक सेठ का मूण्डा माळै छड़गी। म्हां ऊँ चमक में पूरी तरां चून्दो खागो। रांपी अर तळा नै छोड़र कांई भी कोनै दीखै।

मूंनै या मालूम छै या रांपी सेठ की छै अर दिनाथ्यां सेठ नै संभलाणी पड़ै छै। म्हां रोज सुवारैई आऊं छूं अर ईंनै सेठ की गिरफत में से छुड़ाऊं छूं। मूंनै या भी मालूम छै कि या रांपी सेठ की कदै भी कोनै होंणी। सेठ कदै भी ईं नै आपका हाथ में कोनै लेणो, पण रांपी अब म्हारी भी तो कोनै होणी नैं।

काणां कांई वात छै कि म्हारै देखतां-देखतां सब अेक-दूसरा सूं अलग होता जार्‌या छै। सब अेक-दूसरा कै खिलाफ़ भी होता जार्‌या छै। रांपी मंजूर के खिलाफ़, मंजूर तळा के खिलाफ़, तळो पैरवाळा आदमी कै खिलाफ़ अर सेठ रांपी, मंजूर, तळा अर आदमी सबके खिलाफ़।

"चौंथू, तळा काटवा की स्पीड वढ़ा।" सेठ छाती माळै आ खड़ो हुयो। म्हारी अर रांपी की वात वन्द होगी अर रांपी अब तळा नै काटवै लागगी। सेठ अब भी सामानै ऊबो छो। रांपी कांपगी ऊं सै अर म्हारी आंगळी माळै छड़ वैठी। खून ई खून होगो तळा माळै, रांपी सुहागण-सी मांग-सी सजगी। सेठ गरज्यो– "काम करवो न आवै तो निकळ ईंठा सूं। चाल पधार। थारा जस्या घणाई वैठ्या छै म्हारै दरुज्जा वारै।

म्हां आंगळी को खून रोकवा री कोसिस करतो रह्‌यो। दो-च्यार साथी म्हारा मांई आवै लाग्या। सेठ सबनै दक्काल्यो– "आप-आपको काम करोजी। ईंनै तो काम करणो ई कोनै छो। फोकट में तनखा चाइजे छी ईंनै। काम में दीदो लागै कोनै। आज आंगळी ई काटली।" सब लोग सकपकागा अर आप-आपकी जगां पोंछगा। म्हां उठ खड़ो हुयो। फैक्ट्री रा दरुज्जा मांई जातां भीत डर लागर्‌यो छो। मूंनै लाग्यो जयां म्हारी औरत अर म्हारा टावर दरुज्जा माळै ऊवा छै अर म्हारै फैक्ट्री में ई रैवा कै तांई धक्को देर्‌या छै। सेठ फैक्ट्री सूं वारानै निकाळवानै म्हारै धक्का देर्‌यो छै। दोन्यू ओरचां की ईं धक्कमपेल में म्हारी आंगळी को खून निकळतो जार्‌यो छै। म्हां डरतो-कांपतो दरुज्जा मांई आयो। ऊंठै न म्हारी औरत छी, न टावर अर न ही सेठ। केवल दरुज्जो छो अर वो खुल्लो पड़्‌यो छो। मूंनै वारानै निकाळवा तांई।

म्हां वारानै आगो। जयां कोई नार रा पींजरा में आगो हो। म्हां खड़ो-खड़ो सोचतो ई रह्‌यो। मूंनै या समझ में कोनै आई कि म्हां पन्दरा वरस सूं रांपी चलातो आर्‌यो छूं अर आज ईं रांपी सूं म्हारी या आंगळी क्यां कटगी? तळो अर रांपी नै खून में लथपथ पड़्‌यो छोड़ म्हां आंगळी न पकड़्‌यो-पकड़्‌यो फैक्ट्री सूं वारानै आगो। कुण रो खून हुयो छो या? आंगळी को, रांपी को या तळा को या फेर यां सबको? कुण रो खून हुयो छो या? •••

कहाणी–

‘आडकाठणी’

☐

भगवान किराडू नवीन

आज भोरान भोर चीख-चिलाहट सुण'र हूं जागग्यो। कानां में अैई सबद गूंज रैया हा, "अरै म्हनै अधबीच में छोड़गी ए, अबै हूं बूढ़ापो कियां काढ़ूला सेठाणी। रात री तो आछी भली ही दिनूंगे धोखो कड़्यां देगी ए। हूं तो गळग्यो रे, चौपट होग्यो रे। अरे राम ओ के कियो। किस्सै जनम रो बदळो लियो रे।"

मैं, आ दर्द भरी अवाज सुण'र गंभीर सो होग्यो। तुरन्त भाज'र गळी में गयो। देखूं तो जज सा'ब चिल्लाय रैया हा, करम पीट रैया हा। म्हनै देखता ई बोल्या, "मेजर साब अबै हूं अेकलो ई हवेली में कियां रैऊंलो, अै तुम्बोला, माळिया, गांखा म्हनै काट खासी। गरीब मार होगी रे। साठां में (साठ बरस री उम्र में) रूळायगी।" "धीरज राखो जज सा'ब। ओ संसार है। ईं रो चक्करो ईयांरकोई चालै। आणो अर जाणो बस इत्तोई संसार है। अगलै री चीज ही, अगलै आपरी पूठी ले ली। हीमत राखणी। थांनै दो रोटी-बोटी ऊं मतलब है। रुपियां सबनूं बड़ो परिवार है। थांरै लाल नईं तो कांई माल तो है। हाथ पोलो जगत गोलो।" हूं इत्तो कैयर लास खनैं पूग्यो। म्हनै थोड़ो वैम हुयो जद म्हैं जज सा'ब रै नैरैं खानी देख्यो। आप दरदीला बोल तो घणा ई बोल रैया हा पण आंख्यां में आंसू रो नाम ई नीं हो। मैं, धीरेसीक जज सा'ब खनै जायनैं बोल्यो, "जज सा'ब लास के मूं माथै झाग कियां आ रिया है।" "म्हनैं के बेरो। रात आळी दुवाई निसर रेई है। इतो कै'ता-कै'ता जज सा'ब आगे सिरकग्या।" इत्तेई बांरै सागै खरचा उडावणिया चेला-चांटी आया अर बोल्या, "जज सा'ब जल्दी करो। लास नै घणी देर घर में नीं राखणी, कुसुगन हुवै। म्हें दौड़'र सिणिया बांस लावां। इते थे ईंरो मूंडो ढकदो, माख्यां भिनभिनाय रैई है।" मैं लास रै कनै बैठ्यो बांरी बातां सुण रैयो हो अर मन में सोच रैयो हो'क थे तो माख्यां ऊं गया गुजर्‌या हो, अै तो मर्‌योड़ी लास माथै मण्डरावै अर थे जींवती जूण सागै मण्डरावो।

"अरे मेजर सा'ब थे इतै पंडितजी नै बुला लावो, थांरो राम भलो करसी।" गळै री ट्यून नैं करुण रस री चासणी में भिगोवता जज सा'ब बोल्या। हूं तो मौको तक रैयो हो। हूं तपाक सूं उठ्यो। बारै जावण लाग्यो। इते में ई जज सा'ब

केयो, "थे पीताम्बर, चद्दर लेय'र आवो। श्रो 'घोचो' पंडितजी नैं बुला लासी।"

मैं म्हारै घरां आयो। कमरे में आयर घरआळी नैं कैयो आ के होगी ? अर ईयां कियां मरगी। "वा बोली, बळन्दो, अबै होगी जिकी होगी। वा तो पापो कटायगी। रोज-रोज री मारनाऊं अेक दिन मरणो आछो। हारियो जुआरी बटासिया भरै। जे घणो घाटो लाग जावै जणै बटासिया नी भर'र हाथ में होवै जिकै री ठोक मारै। हूं थारी बातां नी समझ पाय रैयो हूं। साची-साची बता।"

"अबै के बताणो है, मरियोड़ी री मिट्टी थोड़ी खराब करणी है।" "नई तूं बता के बात है? हूं औरत जात माथै हुयोड़े अत्याचार नैं नीं सै सकूं'ला। म्हें मिलट्री सूं कम्पलसरी रिटायरमेंट ईयै वास्ता लियो है क ऐ आए रोज जिका, आपरी लालसा नैं मिटावण खातर नारी ऊपर कहर ढाय रैया है। बीरी फूटरी काया सूं खेलर, दूजे तन अर धन री भूख मिटावण खातर, कणैं ई औरत नैं बाळ दे अर कणैं बीरो गळो मोस दे। हूं ई जज री बच्ची नैं नीं छोडूं'ला।" "आपांनै के पड़ी, आपां क्यूं हां लाडे री बूआ बणा। आपांनै आपणा टाबरिया पाळना है। हुई-हुई देखो। ईरै खनैं पईसै रो बळ है। बिना पढियो-लिखियो जज सा'ब बजै। सगळी गुवाड़ ईरै आगै अछन-अछन करै। थां जिस्सा कित्ताक। पैला देस सेवा की। अेक हाथ अर अेक आंख दे बैठ्या मातभूमि नैं। अबै बची-खुची देह नैं ई पीसा आला ऊं टक्कर लेयर कर जाओ म्हनैं घर-घर री पणिहार। थांनैं बीच में नीं बोलनो है।"

हूं ईं बातां नैं सुण'र कांप उठ्यो, मुठ्यां भीच ली अर अेक जस सो आतो देख'र माचै ऊपर बैसग्या। कांई करतो मन तो घणो ई हाले पण टट्टू को चालै नीं। मैं फेर म्हारै पौरस नैं याद कर'र जोस में आयो। कमर में गमछो कस'र, पीताम्बर, गंजी पैर'र बाण्डे आयो। बारै आयर देखूं तो जज सा'ब रै घर आगै पुलिस आयोड़ी खड़ी। मैं घर रै कनैं गयो तो देखूं जज सा'ब नैं पुलिस थाणैं चालण रो कै रैई है। अर आगै देखूं तो आंगण भी खाली पड़्यो है। जज सा'ब जीप में बैठतां-बैठतां म्हनैं देखते ई म्हारै ऊपर टूट पड़िया, "अरै टूंटिया थनैं तो नीं छोडूं'लो। थे म्हारो घर उजाड़ियो है। बीरी मिट्टी पलीत करवाई है। हूं जे नीं छुट्यो तो कांई थारी मेजरी तो मांय बड़वाय दूं'ला।" म्हैं अचम्भे में पड़ग्यो, बोलणो चावते थकां नीं बोल सक्यो जाणैं कैण ई मूंडे रै ताळो लगाय दियो हुवै। इत्तै ई बींरा चेला-चांटी सिणिया बांस लेय'र आग्या। "वांरै कानां में ई आ बात पड़ी'क ई मेजर री बच्ची नैं नीं छोड़णो है। चाहे हूं लाखां सूं लखारो ई बण जाऊं।" वा पट्टा मंडली म्हनैं घूर-घूर देखण लागी। अर म्हारै ऊपर टांट कसण लागी, "अरै टूंटाराम थारी बची-खुची काया रो हिसाब कर दांगा। चिन्ता ना कर बच्चू।" आ ललकार म्हनैं चीन रे हमले दांई लागी। जद चीन पैलड़ो हमलो धोखे ऊं कर्‌यो जणैं हूं सो सवासै चीण्यां नैं ठण्ड पाई ही। अेक टेकड़ी रो ठूंठ म्हारी ढाल बण्योड़ो हो। हूं लारली बातां नैं याद करतो-करतो वां च्यारां-पांचा माथै टूट पड़्यो अर ईत्तो जूंजार होग्यो'क लातां री अर डेढ हाथ री

सिरिया नूं वांनै ठोकतो-ठोकतो गळी रै नाकै कनै लेग्यो। वठै ऊं वै आपरी ज्यान बचावर इस्या ठेवा दिया'क पूठो मूंडो फेर'र म्हारै सांनी देख्यो तक नीं।"

"थां तो थांरी कर देराई।" घराळी म्हारै घर में घुसतै ई बोली। म्हैं कैयो, "बावळी हूं तो थारै नूं वातां करतो-करतो गयो तो पैलाऊं ई पुलिस आयोड़ी ही।"

"थां कैनेई थारां भेज दियो होसी। थांरी वाको घणो चालै। हूं जाणूं थे चलायर आफत मोल लाणै में कदे नीं चूको।" "फेर बाई बात आप री हलाल। बात नै गुणै नीं समझै नीं, आपरो ई आपरो दळियो दळै।" "तो पुलिस नै के बात आती अर जज सा'ब थांनै ई क्यां कैयो। सगळी गळी-गुवाड़ भेळी हुयोड़ी ही वांनै तो नीं कैयो। थे जाणो अर थांरो राम जाणै।

"अरे थारी खोपड़ी भी खराब होगी के। म्हारा बुरा दिन आग्या दीखै। थूं ई म्हारै ऊपर सक करै। अबै कीनै ई की कैणो न कीं सुणनो। वार्कै में मूंग घाल लेवणा चइजै जद आदमी री छांया ई वींरी दुसमण बण जावै।"

"मेजर सा'ब कठै है?" बारै ऊं अवाज आई। म्हैं झाको घाल्यो तो कांई देखूं'क म्हारै घर आगै जज सा'ब रो साळो खड़ो है। मैं, वांनै देख'र बारै गयो। वै म्हारै ऊपर गरज पड़िया, "ओ काम थां आछो नीं कर्यो। म्हारै वेनोईजी नै क्यूं पकड़वाया? थां तो म्हानै बाप नूं ई ज्यादा मोटा राख्या। म्है वांरो गुण नीं भूल सकां।" "अरै आपनै ओ वेम कियां होग्यो। मैं तो सूतो पड्यो हो। थांरै वैंदोईजी री चिल्लाहट सुणर हूं तो उठ्यो हो भाई सा'ब म्हनै क्यूं गामखा वीच में लेवो हो। वे वींरा चेला-चांटी भी म्हैं नूं वोथेड़ो कर'र गया है। हाथापाई माथै उतरिया जणै दो हाथ करणा पड़िया। मरता क्या नई करता।"

इत्तेई तो पुलिस आगी। पुलिस नै आई देख'र वांरो साळो वोल्यो, "लो सा इत्ती देर म्हां ईयां नै बातां में लगायोड़ा राख्या नीं जणै ओ हणै रफूचक्कर हो जाता।"

"थां हणै मार पीट करी ही के।" पुलिस पूछ्यो।

"नीं। म्हारै ऊपर वां हमलो कर्यो म्है तो वांमूं वचाव कर्यो हो।"

"वांरै जामू उपड़योड़ा पड़्या है अर ऊपर ऊं झूठ बोले।"

"मैं तो अंदर ऊं बोलूं थे ऊपर ऊं तणखा लियोड़ा बोल रैया हो।"

"चालो थाणै चालो।"

"चालो।" ठैरो, अेक मिट हूं अेस. पी. सा'ब नूं फोन कर'र हालूंला।"

इत्तेई अेक सिपाई बोल्यो, "अरे जाणैदै, आपणी तो बाड़ी पकगी, खामखा कठै ई आपां फस जावांला। हणै आळो अेस. पी. खूंखार है। आपां तो औ बड़द्यां होम गार्डियां री पैर'र आयां हां हणै पोल खुल जावैली।"

मैं वांरी घुस-पुस भासा समझतो हो। वै हरेक आखर रे लारै 'च' जोड़-जोड़'र बोल रैया हा।"

मैं कैयो, "थांरा वेल्ट नं. नोट करवाया तो ।" इत्ते में ई वे तो इस्सा भाज्या जाणैं कोई वांरै लारे गण्डक लागिया होवै ।

"मालणजी आप कित्ता वरसाऊं जज सा'व रैं अठै चौका-वरतण करण नैं जाओ हो ?" थाणेंदार पूछ्यो ।

"वीसेक वरस ऊं ।"

"हणैं थे कित्ती ऊमर रा हो ?"

"चाळीसां रैं अेड़ै-गेड़ै ।"

"जज सा'व री वहू कियां मरी ? थे कीं जाणकारी दे सको ।"

"मैं के जाणूं । मैं तो रात री रसोई रा चौका वासण कर'र गई परी । मैं ही जित्ते तांई तो वै राजी-खुसी हा ।"

"थां वीं वखत जज सा'व नैं घरां देख्या हा के ?"

"ना जज सा'व तो वापड़ा घर में हा ही कोनी ।"

"अछा तो थे वीं कमरे में जावो ।" थाणेंदार वोल्यो ।

पछै थाणेंदार जज सा'व नैं वुलाय'र पूछण लाग्या, "ई मालण नैं थे कित्ता वरसां ऊं नौकरी राख राखी है । अर ईं सूं सरुपोत में कियां जाण-पैंचाण हुई ?"

"सा'व आ वीस-वाईस वरसां ऊं म्हारै अठै काम करै है ? ईसूं म्हारी जाण-पैंचाण अेक मोदण री मारफत हुई ही ।"

"वा कुण ही ।" "वा तो सा'व म्हांरै सूं वोत ई सनेव राखती ही म्हारी धरम वैन ही, वापड़ी वड़ी गरीव ही ।"

"अछ्या तो थे भी "वैंनवाद" रा सदस्य हो। ठीक ।

"आ मालण तो कैंवे है के हूं चौका-वरतण करती वीं वखत जज सा'व आपरी लुगाई नैं दवा दे रैया हा सेवा कररिया हा ।" "हां, सा'व मैं तो चौइसूं घण्टा सेवा में ई लागोड़ो रैंतो । वा सई वोली, भाई रै गळै री सौगन ।"

थाणेंदार नै अवै तो पक्को सक हुयग्यो वे। फट मालण रा भींटा पक्कड़'र कैयो, "वोल मालण सांची-सांची वात वता । ओ जज तो कैंवे है'क जैर थे घोळियो ।"

"नईं ओ वापजी मैं कीं नीं जाणूं ।"

"ठैर, म्हारो नाम भी तेजो है, म्हारै तेज ऊं आछा-आछा राख होग्या है । साची-साची वोल नीं जणैं हणैं ओ करण्ट रो झटको देऊं ।" थाणेंदार हळको सो झटको लगायो अर वा वोली, "वताऊं ओ वताऊं, ईये म्हनै कैयो आ आपांरै विचाळै वीस वरसां ऊं भीत (दीवार) वण्योड़ी है, आडकाठणी है, काले ईयै आपांनै माचै ऊपर देख लिया हा । आ कठैई फुलड़ी विखार दैली । आपां मिळर ईरो सफायो करदां पछै थूं'र हूं दोय सागै रैंवांला । थूं म्हैसूं नातो कर लियै । ईं लोभ में ई म्हारी अकल निसार ली अर म्है दुवाई रै सागै अफीम रो डळो घोळ दियो । हेली रो लोभ म्हारी मति नैं खाग्यो अर वंगड़्यां पैरण री इंछ्यां म्हनै ले डूवी ।"

"लो तो अै लोह री वंगड़्या पैरो अर नौ लाख री सरकारी हेली में पधारो ।" थाणेंदार मूंछ्या माथै वट देवतो वोल्यो ।

• • •

काका कमजोर री कुण्डळियां

□

गिरधारीसिंघ सेखावत

जंतर - मंतर

जंतर कस्ट मिटवाणी रोगण चाली मंत,
झाड़ा मंतर वांध, दौड़ी आई कंत ।
दोड़ी आई कंत वखाण मोड रा कीन्या,
समझ देव ओतार समरपित गहणा दीन्या ।
कह काका कमजोर हकीम 'र ओझा अंतर,
पड़ी ढोंगि की आस मरी वा बांध 'र जंतर ।

आखा

आगा देखण डोकरो वैठ्यो चोक विछाय,
धान ऊंवारै लोग सब, मन को रोग सताय ।
मन को रोग सताय रात दिन सोचै ऊंधी,
दिया धूप कर रोगि चढावै आंख्या चूंधी ।
कह काका कमजोर वात सब झूटी भाग्या,
हिय का आंधा होय जका नर देखै आग्या ।

मौसर

मौसर मन कर रै मुरख मिनख जमारो पाय,
जीवत माणस हेत कर मर्‌यां भसम हो जाय ।
मर्‌यां भसम हो जाय निरथ घी चंदण मरघट,
नतमीठो जीमाय, कर्‌यो मंगता रो जमघट ।
कह काका कमजोर मरी मांटी रो ओसर,
जड़ा मूळ मैं जाय जका घर जीमैं मौसर ।

टीको

टीको रोळी काड्‌स्या चावळ चेपां च्यार,
भू घर भेजा सोवणी घर का कोनी त्यार ।
घर का कोनी त्यार सरूपी काम न आवै,
मोटो मांडै मुंह भरण दोलत सूं चावै ।
कह काका कमजोर लाडलो मूंडो फीको,
वेटो चावै चांद वाप नै भावै टीको ।

दारू

दारू दरद भुलावणी कायर ठोकै ताल,
गिरवी घर सो घर दियो करज उतारै खाल ।
करज उतारै खाल कळह पतनी रो ओढै,
टावर टुकड़ा खाय आप भूखो ही पोढै ।
कह काका कमजोर वंद आंख्या मैं मारू,
सगळा रोग समेट ले गई अरधी दारू ।

सासू

सासू जलमी डीकरी पाळी हाथां देह,
ढाळी ऊंची टीवड़ी आंख्यां वरस्यो मेह ।
आँख्यां वरस्यो मेह देज समधि नहीं भायो,
खाणूं पीणूं छोड़ वराती पाछा ल्यायो ।
कह काका कमजोर वीनणी ढळकै आँसू,
पूरो कुणवो छोड़ मर गयी अदखड़ सासू ।

रंग–रेख

पांची मनमीठी

□

ओंकारश्री

नाटकां में पात्रां रो स्वगत कथन आप भण्या सुण्या हुसी। कदी-कदी आपां रै मूंढै सूं भी अप वताई हुय ई जावै। जिका लोग भजन, हरजस, गीत, गजल नै दूहा चौपायां अर जोर-जोर सूं आरती, मंत्र-जप आपो-आप उचारै, एक तरै सूं आ वोलगत भी आदमी री एकांतिक वातचीत रै सिलसिले सूं ई जुड़चोड़ी है। आप-आप रा कंठ नै आप-आप री टेर। आदमी वोले विना रेवै नहीं।

पण कंई-कंई मिनख लुगाई इ स्यान का भी देखवा में आवै, जिका सूता, जागता, चालता-वैठा आपो-ई-आप मन मीठा हुंवता रेवै। खुदोखुद वड़-वड़ करणिये नै लोग मनमीठो कैया करै।

मनमीठां री दुनिया रा रंग न्यारा। म्हारै दूर रै रिस्तै में एक दादी ही– नांव हो पांची। हुसी सितरां नेड़ी। पांची दादी गजब री मनमीठी। पांची दादी गळी गुवाड़ रा टावरां नै, कदी पतासा, कदी मिश्री-दाख तो कदी चिमठी-चिमठी खांड ई देय आधा करती पण कोई टावर दादी रै घर सूं रीतो नीं जांवतो। दादी रै ठाकुरजी रो परसाद आज भी चितारूं तो हिरदै री गाछ मस्ती में झूम उठै।

भरी जवानी सूं रंडापो भोगती पांची दादी घर-संसार री पीड़ांवां सूं भरयोड़ी ही। सुपातर जाण'र– हरजीरामजी रै छोरै माणक नै, पांची खोळै लियोड़ो हो। पांची कनै पूंजी चोखी ही। माणक नै पढ़ायो-लिखायो परणायो, सो कंई करयो। वहूजीराज इस्या पधारया'क अळी री सळी भी अठी-वठी नी करै। पांची मन री जावक भोळी। थे जाणो माल खावणो घणो दोरो। माणक अर माणक री वहू समझ्या'क डोकरड़ी नै पटायां अर सेवा करयां ईयै रै जींवतै थकंई माल-ताल हाथ लाग सकै है। वहू वेटै री लटूरिया-वाजी में मगनीज पोमीज'र डोकरी आपरो सो ई काळजो काढ'र दे दियो। माल हाथ कंई लाग्यो माणक अर माणक री वहू रा रंग राग ई वदळग्या।

पांची परवस हुयगी। छोटी-छोटी वात माथै वहू औझाड़ा देवण ढूकगी। जे वहू नै दो वात कैंवती तो वेटो वहू रै लारै सत्तो हुय'र सामो आंवतो। पांची वोया फूल वींरै हाथ लाग्या कांटा।

या उयाड़ै तो या नातां मरै अर वा उयाड़ै तो या नातां मरै । दुनिया तो ताळ्यां देय-देय नाना पीसण में मजा लेवै ।

पांची मन में फीता गिटती गई, फीता गिटता गिटतै, काळजै में दुख, दरद, नितांवां अर अणकथ पीड़ांवां रा ढीम उपड़ग्या । मूंडो खोलै तो लोग रंडापो थांदै । पांची रै– दुख दरद री सीरी कोई नी । पांची केवै, पांची सुणै, पांची पछतावै सिर धुणै ।

संसार रा जित्ता मनमीठा लोग है वांरै– मनमीठेपण री जड़ में कोई न कोई पीसो जरूर जड़ामूळ में हुवै । सदमे री मार खोटी । पांची पीसी सूं ई बोलती चालती नीं । पण पांची होळै-होळै आपरी बात आप सूं करती तो भी लोगड़ा सुणनाई ही ।

एक'र री बात चेते है । पांची दादी री परसाद लेवण नै म्हूं मोड़ो पूग्यो । दादी बरसाळी में बैठी ही । म्हूं खिड़की कनै पूग्यो तो म्हारै कानां में दादी री मनमीठी बात्यां रा वचन पड़्या–

"खोटा करचा पूरबले भी रा पाय लिया । अबै रांड नै कुण पूछै । वै (सुरगवासी पति) केंवता हा जिकी साच निकळी– गेलसफी, थोड़ो आपो सांभ । नीतर घणा दुख पावैली ।......पांची गळ-गळै सुर में बोल्यां ई गई, बोल्यां ई गई जाणै किन्नी-किन्नी दुख दरद री अतीतमान आप बीती बातां ।"

मैं होळै सी'क हेलो मारचो । "दादी ।"

दादी अचानक झांकती बोली, "इत्तो मोड़ो किंयां आयो रै– गेलसफिया ? ले, मिश्री लेसी'क दाख्यां ?" म्हूं मुळक्यो अर टीकतो सो बोल्यो "दोनूं"– दादी मिश्री दाख्यां रो परसाद दियो । पांची दादी नै मैं एक'र पूछ्यो, "दादीजी ! थे आपै ई आप कंई बात्यां करो ?" दादी बोली, "बात्यां कठै बेटा ! बात्यां गई-आई हुयगी । कोई बात है न कोई चीत"– दादी री निसांसां भरी वाणी रै मरम नै म्हारी टाबर बुध कंई जाण सकती ही । पण पांची रै मनमीठे पण री जड़ में कोई मूळ बात तो ही अर नैचेपाण वा मूळ बात अेक अण सहणी-वेदना री ही– जीवण री आदू पीड़ा ।

पांची नित हमेस लक्ष्मीनाथजी रै मन्दिर जाय'र ठाकुरजी रा दरसण कर'र रोटी मूंढै में घालती । एक दिन म्हूं दादी रै सागै हुयग्यो कोई ऊछब परब रो दिन हो । मन्दिर में अन्तनपार मानखो । म्हूं अर पांची दादी दोनूं अेक जग्यां छायां में खड़ा हुयग्या । छीड़ हुयां पछै मन्दिर में गया । दादी फेरी देवण ढूकी । दादी रै तो बोई मनमीठा पणो । दादी री अपबताई सुण'र म्हूं दादी री पीड़ में झांक्यां तो मनै दादी रो अेक महान मानवी रूप दीस्यो । दादी फेरी में आपै आप बोली– "हे तीन त्रिलोकी रा नाथ म्हारै माणके रो बुखार वेगी मिटा दे । माणके रा पिताजी नै भी इयांई बुखार आयो हो । मनै उठायले सांवरिया ! आज माणके नै देखण नै गई तो वहू मैड़ी रो बारणोई को खोल्यो नी । म्हूं ई ठाली-भूली रांड किसी'क हूं'क बेटो समझ'र जी घालूं ।......पण माणको म्हारो पैला है'क वहू रो.........।"

नगरी रै इणी खुणै सूं आयोड़ी लुगायां मांय

सूं पांची री वात्यां सुण सुण'र कईयां नै इचरज हुयो।

एक वोली- "डोकरी रै जी में तळ तळो घणो।"

पांची री एक जूनी सहेली वोली, "वापड़ी री कोई अवै सुणणियो कोनी। एक जमानो हो आ फूलां तुलती ही। दिनमान रो फेर है।"

मनमीठा लोग मन री वात होठे लावै। खुद ई वक्ता खुद ई श्रोता। लोग एक दूजै सूं वतळावै, वोल वतळा'र जी हळको करै। जिका लोग मन-मन में वुझ ज्यावै, जिका आपरो घर-भेद सरै आम खुलण रै डर सूं संकै अर कैई लोग जिकां रो दुख दरद सुणण खातर दुनिया नै फुरसत नी हुवै तो इस्या लोग खुदोखुदी वातचीत में मगनीजै।

मनमीठापणो भी है एक मानसिक रोग। आदमी नै वोलण सूं रोकदो, आदमी चित्तगेलो हुय जावै। मनमीठो जद खुदोखुदी संवाद करै तो उण रै चेरै-मोरै रा भाव, उणरी भाव-भंगिमांयां इयै वात रो साफ सवूत देवै'क कोई- दमित भावना रो ओ वेग है जिको अन्तरमुखी रूप में प्रगटै।

पांची नींद में वड़-वड़ करती। लारली, आगली सगळी वात्यां रा पुड़द खोलै। एक वार री वात दादी नींद में सूती-सूती हंसती मुळकती लजवंती वाणी में वोली—

"......म्हारो हाथ छोड़ दो। देखो म्हारो मूंढो उघड़्यो .....इयां मत करो। थांरा माजीसा पधार जासी। वस करो......वस करो। कदेई-कदेई तो भैरूंजी ई वण जावो। हुंऽऽऽ।"

घोर दुख-दरद अर अपमान री जूण गुजारण हाळी वीं डोकरी री भरी छकी जवानी रै दिनां री आ रसवंती वात किया फूटी ? मिनख जियै जित्तै जवानी रो वीज डील में कदी जड़ामूळ सूं नीं मिटै।

पांची दुखियारी। मनमीठी लुगाई। मनमीठा लोग, दुख-दरद नै भी मिठास सूं जिया करै। खारा वोल, खारी भावना, खोट-चोट री भावना मनमीठां में नी हुवै।

• • •

फिलिस्तीनी कवी महमूद दरवेस री तीन कवितावां

☐

उलथौ–नंद भारद्वाज

[महमूद दरवेस फिलिस्तीनी साहित्य रा सिरमौड़ कवी मांनीजै। वै बाळपणै सूं ई इजरायल रै कब्जै करियोड़ै फिलिस्तीनी हलकै में रैया। वां अरब नागरिकां माथै यहूदियां रा जुलम आपरी आंख्यां सूं देख्या। इणी वास्तै वांरी कवितावां में इजरायल री इण हमलावरी विरती अर वर्बर अत्याचारां बावत फिलिस्तीनियां रै जूंझारू विरोध री सैंजोर चित्रण मिलै। दरवेस री कविता री आपरौ अेक न्यारौ मिजाज है, वांरी निकेवळी भासा, अनूठा बिम्ब अर आपरौ सिल्प है, जिको वांनै आपरै समाज सूं जोड़ै। महमूद दरवेस 1970 में अेफ्रो-अेसियाई लेखकां री चौथी कान्फ्रेंस में हिस्सौ लेवण सारू भारत आया हा, जिणमें वै लोटस पुरस्कार सूं सम्मानित करीज्या!]

रीस

काळा व्हेग्या
म्हारा हीयै रा गुलाब
म्हारा होठां सूं नीकळी
झाळां धगधगती
कांई रिनरोही, कांई नरक
कांई थे आया हौ
थे सगळा भूखा सैतान!

हाथ मिळाया म्हैं
भूख अर घर-बारै रैवण सूं
म्हारा हाथां में आज रीस है
रीस है अणूती म्हारा मूंडा में
म्हारी नाड़ियां में वैवतै रगत में रीस है
म्हनै सौगन है म्हारी वेदना री

मत आस राखौ म्हारै सूं कंवळा गीतां री
फूल पण जंगळी व्हेग्या है
इण हारयोड़ी रिनरोही में,
म्हनै कैवणा है म्हारा थाकयोड़ा सबद
चाईजै जूना घावां नै औसांण
आई म्हारी पीड़ है

अेक आंधी आघात रेत माथै
अर दूजौ बादळां माथै
इत्तौ ई घणौ के म्हैं हाल रीस में ई हूं
पण काल–
कालै आवैला उछाळौ!

आस

साव मामूली-सो सैत
बाको है थांरी तासळी में
माख्यां नै अळगी राखौ
अर सैत नै बंचावौ !

थांरै घर में ओजूं अेक दरवाजौ है
अर अेक जीरोई !
दरवाजौ बंद कर दौ
अर टावरां सूं अळगी राखौ
ठाडी पून !

आ पून अणूंती ठाडी है
अर टावरां रौ सोवणौ पण लाजमी
थांरै कनै बाकी है ओजूं
जगावण सारू कीं बळीतौ
कहवौ
अर भाळां री अेक गांठड़ी !

• •

म्हारी घोसणा

जद तांई
म्हारी अेक वेंत जमीं ई बाकी है
अेक जैतून रौ रूंख म्हारै कनै
अेक नींबू रौ रूंख—
अेक कुऔ— अर अेक कैक्टस रौ भाड़

जद तांई
म्हारै कनै अेक ई ओळूं बाकी है
पोथी खानौ है मामूली-सो
दादैजी रौ चितराम— अर अेक भींत

जद तांई
बोलीजता रैसी अरबी सबद
गाईजता रैसी लोकगीत
पढीजती रैईजसी कविता री ओळियां
अनतार-अल-अब्से री गाथावां
फारस अर रोम सूं लड़ियोड़ा
जुद्धां री वीर-गाथावां

जद तांई
म्हारै कब्जै में कायम है म्हारी आंख्यां
म्हारा होठ अर म्हारा हाथ—
म्हैं परतख मौजूद हूं जद तांई
म्हारै अनमी नै ललकार
करूंला घोसणा—
मुगती सारू अेक अंतहीण संग्राम
ठौड़-ठौड़ आजाद लोगां रै नांव—
मजूरां-पढेसरयां- अर कवियां रै नांव—
म्हैं करूंला घोसणा—
खावण दौ कळंक री रोटी
कायरां नै, सूरज रा दुसमियां नै
म्हैं जद तांई जींवतौ रैवूंला
म्हारा सबद बोलता रैसी—
"रोटी अर हथियार
मुगती रा जूंभारां सारू !"

• • •

राजस्थानी रै बिना राजस्थान रो कांई अरथ ?

☐

सेखावत सुमेरसिंघ

आज राजस्थान री आबादी तीन कोड़ रै ऐड़ै-गेड़ै मानीजै । आं रै अलावा अठै रा अण-गिणती प्रवासी ऐड़ा मिलै जिका दिसावरां में वसै । फेर हरियाणै रा निवासी भी भासा अर संस्क्रति रै हिसाव सूं न्यारा कोनी ! कुल मिला'र भारत में कम सूं कम पांच कोड़ मिनख-मानवी राजस्थानी भासा नै बोलै अर भली भांत समझै । आ नफरी इत्ती थोड़ी कोनी'क उण री अणदेखी करणो समझदारी बाजै ।

इतिहास में हजार वरस कम कोनी हुवै अर वै ईं वात री चोखी तरै हामळ भरै'क राजस्थान अेक भासा बोलै जिकी मरुभासा, मरुवाणी अर राजस्थानी रै नांवां सूं जाणी-पिछाणी जावै । जूनी राजस्थानी री पैठ रो ईं सूं वड़ो सवूत और कांई हुवै'क नुंवी गुजराती रा पैला हिमायती झवेरचन्दजी मेधाणी 'सौरास्ट्र नी रसधार' में उण नै गुर्जर भासा री मा मानी । आज री सिन्धी अर पंजाबी पुराणै जमानै में राजस्थानी रै कित्ती नेड़ी ही आ वात भी भासा सास्त्र्यां सूं छानी कोनी ।

मायड़ भासा रै रूप में राजस्थानी भासा अेक सुतंत्तर अर समरथ वाणी मानीजै । लारला दस सईकां में ईं रो ओ दरजो कदे भी कम नीं हुयो । पोथीखानां री साख नै परमाण मानां तो जित्तो साहित ईं एकली भासा में सिरज्यो गयो उत्तो स्यात आखै भारत री तमाम भासावां में भी आज तांई नीं लिख्यो गयो । गद्य अर पद्य री सारी विधावां में राजस्थानी रो पुराणो साहित मिलै । आज रा नुंवा कवि 'भूंगरजी रा घेसळा' पढ़ लेवै तो वां री हेंकड़ी धरी री धरी रै जावै । वात साहित में राजस्थानी पुराणां सूं होड़ लेवै । फेर साधनां रै अभाव में ईं रो कित्तो साहित काळ कवळित हुयो ओ तथ अणजाण्यो कोनी ।

अरबी अर फारसी राजस्थान में आई अर वां नै राजस्थान सीखी । उणां रा अणगिणती सवदां नै राजस्थानी भासा पचाया । हरावळ, जौहर अर साका जेड़ा लाखां सवदां नै आ आतम-सात करगी अर वै ओपरा नीं लागै । भासा री ईं सूं वड़ो जीवट और कांई हुवै'क आ अरबी अर फारसी जिसी पुराणी भासावां नै परायी नीं मानी । फेर अंगरेजी रो पग फेरो हुयो तो उण रा भी टेसण, सींगल अर रेल जिसा सवदां नै हजारां री तादाद में आ डकार लीना ।

राजस्थान रै लोगां में अेक ऐव जरूर सांप्रत लखावै'क अै अपणायत रै फेर में घणा वेगा पड़ जावै अर परायो कोई नै भी नीं मानै। वुत परस्ती रा विरोधी मुगलां रै दरबार नै अठै रा रहवासी 'दरगा' रो दरजो दियो अर बादस्यावां नै वै 'खाविन' कैवता। फिरंग्यां नै लाट सा'ब मान्या। ईं रो नतीजो ओ निकळ्यो'क राजस्थान नै 'रास्ट्रभासा' रै नांव पर आप रो गळो कटाणो पड़्यो। आजादी सूं पैली उर्दू अर हिन्दी रा 'मिसनरी' अठै पूग्या अर वै आप री मीठी छूरी सूं कोड़ां-कोड़ राजस्थानियां रा कंठ यूं काट लिया'क जियां कोई कुम्हार चाक पर चढ़ेड़ै माटी रै वरतण नै डोरै सूं अधर होळै सीक उतार लेवै। अधकचरा पढ्या-लिख्या राजस्थानी नै खड़ी बोली हिन्दी री अेक उपभासा बतावै; पण वै हिये रा आंधा भासा रै बारै में क्यूं भी नीं जाणै। हिन्दी अर राजस्थानी में वचन अेक दूजै सूं विपरीत हुवै। हिन्दी रै व्याकरण में 'लड़का' सबद अेक वचन हुवै जद'क राजस्थानी में ओ बहुवचन मानीजै। ओ एकलो फरक आं दोनवां नै न्यारी-निरवाळी भासा सिध करण रै वास्तै मोकळो वजन राखै। और तो और, घणकराक राजस्थानी ई हिन्दी नै राजस्थान री मायड़ भासा मानै जद'क वा मायड़ भासा कठै री भी कोनी। वा तो फगत उर्दू रो रास्ट्रीयकरण लागै जीं नै संविधान राष्ट्र भासा मानै। मायड़ भासा लोक कंठा में विराजै, कागद पर नईं। ईं वास्तै उर्दू अर हिन्दी नै कठै री भी मायड़ भासा मान लेणो ठीक कोनी। राजस्थान रा तीन कोड़ निवासी जिकी भासा बोलै वा राजस्थानी बाजै अर आ सौ टंच राजस्थानियां री अेक मातर मात भासा रो रुतबो आज भी राखै।

राजस्थान री नुंवी तालीम पूरव सूं पूरविया ल्याया अर वां रै साथै अठै हिन्दी रो पगफेरो हुयो। उण सूं पैली उर्दू अर अंगरेजी अठै राज-काज री भासा बाजती। आजादी सूं पै'ली राजस्थानी तो राजस्थान री मायड़ भासा ही; पण खुद राजस्थान बरसां पछै बण्यो। उण वगत कोई आ भी नीं जाणतो'क भासा रो बोल-चाल रै अलावा कोई मतलव हुवै'क नईं। भासावार सूबा बण्या जणां तांई राजस्थान जावक अचेत सो रियो हो अर जाग्यो तो गूंगो-वै'रो बण'र। आजादी रो मूळ अरथ गूंगा-वै'रां री नफरी नै कम करणो हुवै; पण आजादी रै बाद राजस्थान री हालत ऐड़ी ईज होती जावै तो कांई माना ?

आज निजर पसार'र देखां तो हर दौड़ में राजस्थान पिछड़ेड़ो ई नईं अपरंच जावक वैसक्यां पड़ेड़ो लागै। कारण ओ ईज'क ईं नै लोगड़ा सामंतसाई रो हिमायती करार देवै'कीं सिरफिर्‌यां रै मुजब तो राजस्थानी सामंतां रै अलावा भासा ई दूजै लोगां री कोनी; पण अै आखी अटकळां कोई वकत नीं राखै। सार री बात इत्ती ईज लागै'क राजस्थानी रै अभाव में राजस्थान री कोई सारथकता कोनी। भासा रै साथै धरम, दरसण अर संस्कृति जिसा अणगिणती सवाल जुड़ेड़ा रै'वै अर वा ई सेस हो जावै तो मानखो मानखो नीं रै'वै। सांच कै'वां तो आजादी रै पछै राजस्थान नै ओठाळ्यां चालण रै अलावा दूजी कोई उगती चीत ई नीं आयी। अठै रा प्रवासी दिसावरां में विणज करै

अर आखै भारत रै अरथतंतर पर हावी वाजै; पण वांनै वांगला अर मराठी रा सबद कोस लुच्चा-लफंगा बतावै। कारण इत्तो ईं'क वै आप री मायड़ भासा नै सांप-छछूंदर री तरियां न पूरी तौर पर गळै सूं नाचै उतारै अर न वीं नै थूक'र प'री वगावै। वै मारवाड़ी जे सायड़ भासा नै उजागर करण सारू माली इमदाद करै तो बात वणै।

अठीनै राजस्थानी रा हिमायती ऐड़ा मिलै जिकां नै ईं भासा में बोलणो तो अलवत्ता फेरूं भी आवै; पण वै दो ओळ्यां कागद पर मांड कोनी जाणै। अै लोग राजस्थानी नै दर गयी-बीती वणा ना'खी। अै हिन्दी री मारफत राजस्थानी रा वखाण करै अर वै भी इसा'क पढ़'र हँसी आवै। वांसूं तो ज्यादा राजस्थानी वां री अणपढ़ लुगाई जाणै; पण डाकदर री पादी उणां नै मिलै। नतीजो ओ निकळ्यो'क जीती-जगती राजस्थानी सोध रो विसै वणगी। वां नै चाइजै डिग्री, नौकरी अर लाख पसाव जिकां रै वास्तै वै कुरलावै। अकादमी अर विस्वविद्यालयां री मारफत एक ठूंठ-ठोळी राजस्थानी रै नांव पर आप री पेटालिवाड़ी भलांई करती रै'वै; पण ईं तरै राजस्थानी री हालत संस्क्रत सूं भी गयी-गुजरी हो जावैली। राजस्थानी जीवंत मायड़ भासा रै रूप में पाछी थरपीजै जद सांस आवै।

राजस्थानी रै मायड़ भासा वाळै रुतवै में कोई नै सक-सूवो अब कोनी। ईं वास्तै ईं नै पैलीपोत संविधान में सामल करवाई जाणी चाइजै। पंचायतां अर प्राथमिक पाठसाळावां में ईं नै मानता मिलै तो आ आप रै पगां पर खड़ी हुवै। आ जैंपुर गांव सूं अर वठै सूं दिल्ली पूगै तो जात प'लै। ओ बीड़ो जे कोई चावै अर क्यूं कर दिखावै तो बड़कां री मुगती हुवै।

• • •

समीक्षा

□

काल चेतना

स्री गोपाल जैन

प्रकासक–इन्टरनेशनल फोर्म फार फिलोसफी लिटरेचर एण्ड अलाइड ब्रांचेज लक्ष्मणगढ़ (सीकर-राज०) मू० पांच रुपये।

'काल चेतना' राजस्थानी री अेक लाम्बी कविता है जिण रो प्रकासण अेक पुस्तक रै रूप में हुयो है। स्री गोपाल जैन हिन्दी री साठोत्तरी कविता रा मानीता कवी हैं अवै राजस्थानी रै मांय भी वै खूब कवितावां लिख रैया हैं। मूळ रूप में जैन साव विचारक अर चिन्तक हैं इण वास्तै उणां री कवितावां में अेक ठोस विचार, नुवीं दीठ अर स्थितियां नै पकड़वा अर समझण री गैरी पैठ है। 'काल चेतना' कविता आज रै युग बोध अर सन्दर्भां नै लेय'र चालण आळी महताऊ कविता है जिण रै मांय अस्ति अर अस्तित्व चेतना री अभिव्यक्ति रो व्यापक चित्रण है। आज रै मिनख रै अस्तित्व री सार्थकता अर उण रो संघर्स पूरै युग रो मूल प्रस्न है। कवी वां स्थितियां नै उजागर करी है जकी मिनख रै अस्तित्व सामै संकट बणारी हैं।

कवी रै सबदां में जीवन बोध अस्तित्व परक नियति द्रस्टि रो अन्वेसी, अस्तित्व चेतना यात्रा री काल बोध री रचना अर युग नियति दिसा चिन्हा री कविता काल चेतना कठै-कठै लागै कविता में विचार पक्ष अतो हावी होग्यो के कवितापन उण रै हेठै दबग्यो। खैर, फेरूं भी राजस्थानी भासा री लाम्बी कवितावां में जैन साव री ईं कविता रो अेक ठावो स्थान गिनीजैला।

सूंटो

डॉ० उदयवीर शर्मा

प्रकासक–राज० मा० विद्यालय, वड़वासी, जि० झुन्झुनू। मू० आदर्श निर्माण भावना।

राजस्थानी में 'रितु काव्य परम्परा' रो अेक न्यारो निरवाळो रूप रैयो है। रितु जठै बदलाव अर नुवैपणै नै सामी ल्यावै बठै ई मिनख नै कीं सोचण अर समझण सारू मजबूर भी करै। कुदरत रो आपरो फुटरापो भी है तो कुदरत रा केई प्रकोप भी हैं सूंटो भी अैड़ो ई अेक प्रकोप है जको थोड़ो ताळ में आपरी विनास लीला सूं पिछाण करा देवै। डॉ० उदयवीर सरमा अैड़ै ई सूंटै नै लेय'र आपरै काव्य री सरजणा करी है। सूंटै रो अेक सुभाव अर स्वरूप है वो जद आवै तो नुकसान जरूर हुवै। कवी इण स्वरूप री केई जगा केई परिस्थितियां में कल्पना करी है अर आ

मान'र चालै'क जे दूजी जगां ग्रैड़ो सूंटो ग्रावै तो नुवीं स्थिति पैदा हुय सकै है। इण वास्तै सूंटै नै गरीबी, पूंजीवादी, विद्रोही प्रवृति ग्रर क्रान्ति सूं जोड़'र कवी ग्रापरो प्रगतिसील द्रष्टिकोण प्रकट करचो है।

समाज ग्रर मिनख री मोटी ग्रवखाइयां री गैरी ग्रर ठावी समझ नै लेय'र चालण ग्राळो ग्रो काव्य ग्रठै री माटी, ग्रठै री संस्क्रति ग्रर ग्रठै री मूल विचार धारा सूं जुडचोड़ो है। कविता कती साफ ग्रर दिल-दिमाग पर ग्रसर करै, इण रो उदाहरण सूंटो है। लोक जीवन ग्रर लोक भासा रा ठेठ सबदां रा सुभाविक प्रयोग सूंटै काव्य में है। सूंटै रै माध्यम सूं ग्रठै री प्रक्रति, ग्रठै रै जन-जीवण ग्रर मिनख री भावनावां रो मनमोवणो चित्रण करचो है।

मरू-मंगल

सुमेरसिंघ सेखावत

ग्रलका प्रकासन, ग्रानन्द नगर, सीकर (राज०) : मोल २१ रिपिया

ग्रेक रूसी कवी रो कैवणू है'क कवी री सांची पिछाण रो ग्रेक कारण उण रो ग्रापरो जमीन सूं जुड़णू है। जे इण कथन रै सन्दर्भ में राजस्थानी रा मानीता कवी सुमेरसिंघ सेखावत री काव्य-क्रति "मरू-मंगल" देखां तो लागै'क सुमेरसिंघ सेखावत राजस्थानी धरती रा ग्रेक लूंठा कवी है। "मरू-मंगल" में राजस्थानी री छंद ग्राळी ग्रर नुंवी कवितावां है। ग्राज जठै कविता छंद-विधान सूं वारै ग्रायगी वठै सुमेरसिंघ हाल भी कविता सारू छंद रै सांचै री जरूरत मैसूस करै। उणा रो कैवणू है'क "छंदा री ग्रळियां-गळियां रास रमणो ग्रोखो'क चोखो, रम'र पजोखणिया जाणै ...... विना नैट रै टेनिस खेलणै रो काई ग्ररथ ? गति, लय ग्रर संतुलन रै ग्रभाव में कविता कविता हो ही कोनी सकै। विना भीतां रै जे कोई छात ठहरै तो छंद-विहूणी रचणा कविता हुवै।" पण म्हारै खयाल सूं छंद ग्राज विवाद रो विसै रैयो नी ग्रर छंद-विहूणी कविता ग्राज दुनिया री सगळी भासावां में लिखीजै ग्रर 'कविता' भी मानीजै। हां, जद वै लय ग्रर गति री बात कैवै तो वा ठीक है– नुंवी कविता में भी लय ग्रर गति है। पण छंद री लय ग्रर गति ग्रेक सीमा भी है स्यात इणी वास्तै कवी छंद सूं वारै ग्रायो या उण री जरूरत मैसूस नी करी।

ईं संग्रै में "मरू-मंगल" ग्रेक लाम्बी रचना है जकी रै मांय 221 छंद है पूरी कविता ग्रेक प्रबंध काव्य जैड़ा व्यापक संदर्भ नै लेय'र चालै ग्रर इण द्रस्टि सूं ग्रपणै में ग्रेक पूरी कविता है। ग्रा कविता राजस्थान रै सांस्क्रतिक जीवण री मूळ चेतना ग्रर ग्रठै रै दरसण सूं रंग्योड़ी है। इण रै मांय ग्रठै रो ग्रोपतो ग्रतीत है तो ग्राजादी रै पछै ग्राई, मैंगाई, भ्रस्टाचारी, रिस्वतखोरी, फैसन-परस्ती, जंगळ रो कटणो इत्याद रो सांचो चित्रण है। ग्रा पूरी कविता युग रै यथार्थ नै तीखै व्यंग्य सूं प्रगटै। ईं कविता रै मांय ग्रोज रो सुर, स्थितियां री ऊंडी पकड़ ग्रर सन्दरभां रा लाम्बा-चौड़ा ग्रायाम है।

मरू-मंगल रै ग्रलावा ईं संग्रै री दूजी कवि-

तावां में आज री स्थितियां अर आज रै मानखै रै जीवरण-संकट री विडम्बनावां रो सांचो रूप है। सुमेरसिंघ री कवितावां में जठै अेड़ै-छेड़ै री जिंदगी माथै सटीक व्यंग्य हैं (मालक वण जीवो भाड़ेतयां, अधुना अोपरो इत्याद) वठै देस प्रेम, जौहर अर जलमभोम सारू त्याग अर वलिदान रै इतियास रो लूंठो अोज भी है (सूरा देस रा सिरमोर, वा पिरथी तो पदमणियां री, जस री जोतां जागै, राजदंसा रो देसूंटो अो भारत रा खेतरयाळो इत्याद)। केई कवितावां जीवन री असगंति (अे सुगणी सुरसत वता मनै, जद सुरसत भूखी सोवै) उजागर करै तो केई कवितावां में कवी रो चिन्तन अर विचार री अेक खास भूमिका भी दीसै (मकड़ी रो जाळो, कस्तूरो मिरग इत्याद)।

"मरू-मंगल" री कवितावां सहज अनुभूति री तीव्र अभिव्यक्ति कही जा सकै है। सुमेरसिंघ सेखावत में भासा री मंजावट अर छंद री गैरी पकड़ है।

दौर अर दायरौ

नन्द भारद्वाज

प्रकासक–धरती प्रकासन, गंगासहर, बीकेनेर। कीमत 35 रिपिया।

नंद भारद्वाज राजस्थानी भासा री नुवीं पीढ़ी रा मानीता कवी हैं। कवी रै साथै ई साथै वे टेमोटेम राजस्थानी भासा अर साहित सूं जुडचोड़ा दूजा प्रसंगा अर समस्यावां माथै भी विचार करता रैया है। ईं पोथी में इण रा कीं लेख, लियोड़ा इन्टरव्यू अर पोथी समीक्सावां हैं। आ आज अेक तयसुदा वात है'क राजस्थानी रै मांय अेक गत-गुंअे री समीक्सा रो अभाव है पण आ जरूर है'क साहित अर कविता माथै विचार करतां थकां केई अेड़ी वातां सामी आवै जकी राजस्थानी आलोचना के नरूप सारू मददगार वण सकै। 'दौर अर दायरौ' पोथी रा तीन खंड है– परिपेख, अंवेर अर साख। परिपेख खंड में नंद भारद्वाज राजस्थानी रै नुंवै लेखन री समस्यावां, भासा री अेकरूपता अर लोक संस्क्रति रा कीं अेड़ा सवाल उठाया है जका रो नुवां संदरभां में गैराई सूं सोचणू घणूं जरूरी हो। अंवेर खंड में आधुनिक राजस्थानी कविता रो दौर अर दायरौ दिखायो। दूजै रूप में कैय सकां हां'क ईं लेख में भारद्वाज मोटै रूप में आधुनिक कविता री सरूआत सूं लेय'र आज तांई री नुवीं कविता री केई प्रव्रतियां रो लेखो प्रस्तुत करचो है अो लेख ईं पोथी रो अेक महताऊ लेख है। सत्यप्रकास जोसी, नारायणसिंघ भाटी अर सेठिया री पोथ्यां वावत लिख्या लेख विसुद्ध आलोचक री नजर राखै। आं लेखां में नंद भारद्वाज री कविता री समझबूझ गैराई अर आलोचना री सामरथ रो पतो लागै। घणै विस्तार सूं लिख्योड़ा अै लेख पोथी री आलोचना रै अलावा राजस्थानी आलोचना रा केई मानदंड भी तै करणै वास्तै मजबूर करै क्यूं'क भारद्वाज री द्रष्टि राजस्थानी साहित रै पूरै परिपेख में रचना नै समझण री रैयी है।

'साख' खंड में लोगां सूं लियोड़ा इन्टरव्यू हैं जकां सूं इन्टरव्यू देवणियां लोगां का निजी विचारां अर निजी द्रष्टि रो पतो लागै इण रै साथै ई साथै राजस्थानी साहित रै वावत अर कीं इण रै इतिहास रै वावत भी जाणकारी मिलै। इण ढंग सूं आ पोथी केई तरह रा लेखां रो संग्रै है। प्रकासक इण नै 'राजस्थानी में व्यावहारिक आलोचना री पैली पोथी' मानी है, आ वात कीं गळै कम उतरै। • • •

गोरवंद

SUITINGS
For the perfectionist who knows...
SUITINGS :
VIP, Pure Wool,
'Terene'/Wool, SZ 70/30,
Millionaire, Travolta,
Ferrari, Phantom.
Blankets
Shawls

गोरखंद

गोरवंद

गोरवंद्र